



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 297]

नई दिल्ली, मंगलवार, दिसम्बर 23, 2003/पौष 2, 1925

No. 297]

NEW DELHI, TUESDAY, DECEMBER 23, 2003/PAUSA 2, 1925

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 23 दिसम्बर, 2003

अंतिम निष्कर्ष

विषय : चीन जनवादी गणराज्य, हांगकांग, ताइवान, कोरिया जन. गण., सिंगापुर, फिलीपींस और थाईलैंड मूल के अथवा वहां से निर्यातित कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के आयातों के संबंध में पाटनरोधी जांच।

सं. 14/44/2002-डीजीएडी.—वर्ष 1995 में यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 तथा सीमाशुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आंकलन एवं संग्रहण और क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 को ध्यान में रखते हुए:

क. प्रक्रिया

1. संबद्ध जांच के बारे में निम्नलिखित प्रक्रिया अपनाई गई -

i) निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिसे इसके बाद प्राधिकारी कहा गया है) को उपर्युक्त नियमावली के अधीन घरेलू उद्योग की ओर से मै0 गुजरात परस्टोर्प इलेक्ट्रॉनिक्स लि0, गांधीनगर की ओर से लिखित याचिका प्राप्त हुई, जिसमें चीन जनवादी गणराज्य, हांगकांग, ताइवान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, फिलीपींस और थाईलैंड (जिन्हें आगे संबद्ध देश कहा गया है) मूल के अथवा वहां से निर्यात किए गए कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के पाटन का आरोप लगाया गया है;

ii) प्राधिकारी ने भारत में स्थित संबद्ध देशों के दूतावासों को उपर्युक्त नियमावली के नियम 5 के उपनियम (5) के अनुसार जांच शुरू करने की कार्रवाई से पहले

याचिकाकर्ता द्वारा दिए गए पाटन संबंधी आवेदन के प्राप्त होने के बारे में अधिसूचित किया।

- iii) प्राधिकारी ने 24 दिसंबर, 2002 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया जिसके द्वारा सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम की अनुसूची-I में शामिल कॉपर क्लैंड लैमीनेट के आयातों से संबंधित पाटनरोधी जांच शुरू की गई।
- iv) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की प्रति सभी ज्ञात निर्यातकों, आयातकों, उद्योग संघों तथा शिकायतकर्ता को भेजी और उन्हें अपने विचारों से लिखित रूप से अवगत कराने का अवसर प्रदान किया।
- (v) प्राधिकारी ने उपर्युक्त नियम 6 के उपनियम (3) के अनुसार सभी ज्ञात निर्यातकों तथा संबद्ध देशों के भारत में स्थित दूतावासों/उच्चायोगों को याचिका की एक-एक प्रति भेजी।
- (vi) प्राधिकारी ने संबंधित सूचना प्राप्त करने के लिए चीन जनवादी गणराज्य, हांगकांग, ताइवान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, फिलीपींस और थाईलैंड के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी। मै0 आइसोला पैसीफिक इंक फिलीपींस, मै0 दूसान कारपोरेशन, कोरिया गणराज्य, शंघाई नान्या, चीन जन.गण., मै0 किंगबोर्ड लेमिनेट्स, हांगकांग, नान हिंग इंडस्ट्रियल लिमिटेड, चीन जन.गण. और मै0 नान या प्लास्टिक कारपोरेशन, ताइवान ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर दिया है। तथापि, मै0 आइसोला पैसीफिक इंक फिलीपींस, मै0 दूसान कारपोरेशन, कोरिया जन.गण., शंघाई नान्या, चीन जन.गण. से पूरा प्रत्युत्तर प्राप्त हुआ है। कुछ निर्यातकों तथा आयातकों ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर भेजने के लिए समय सीमा बढ़ाने का अनुरोध किया तथा प्राधिकारी ने निर्यातकों और आयातकों के अनुरोध पर विचार करने के बाद प्रश्नावली का उत्तर देने के लिए दो सप्ताह का समय और बढ़ा दिया।
- (vii) संबद्ध देशों के नई दिल्ली स्थित दूतावासों/उच्चायोगों को भी जांच शुरू होने के बारे में सूचना दी गई और उनसे अनुरोध किया गया कि वे अपने-अपने देशों के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली का उत्तर देने की सलाह दें।
- (viii) विदेश व्यापार मंत्रालय(एमओएफटीयू) बीजिंग, चीन जनवादी गणराज्य सरकार, हांगकांग, ताइवान, दक्षिण कोरिया, सिंगापुर, फिलीपींस और थाईलैंड को जांच

शुरू होने के बारे में सूचित किया गया और उनसे अपने देश के निर्यातकों/उत्पादकों से निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावली भरकर भेजने की सलाह देने का अनुरोध किया गया।

- (ix) प्रारंभिक जांच निष्कर्ष की जानकारी 25 जून को जारी की गई तथा सभी इच्छुक पक्षकारों से अपने विचार 40 दिनों के भीतर प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया। प्राधिकारी ने प्रारंभिक जांच निष्कर्ष की एक-एक प्रति संबद्ध देशों के दूतावासों को इस अनुरोध के साथ भेजी कि वे अपने देश के निर्यातकों और उत्पादकों को सलाह दें कि प्रारंभिक निष्कर्ष पर अपने-अपने विचार प्रस्तुत करें।
- (x) प्राधिकारी ने सभी इच्छुक पक्षकारों को अपने-अपने विचारों को मौखिक रूप से 20 अक्टूबर, 2003 को प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया। विचार प्रस्तुत करने वाले सभी पक्षकारों को मौखिक रूप से व्यक्त किए गए विचारों को लिखित में दर्ज करने का अनुरोध किया गया। पक्षकारों को प्रतिपक्षी पक्षकारों द्वारा व्यक्त किए गए विचारों की प्रतियां लेने तथा उसका खंडन, यदि कोई हो, प्रस्तुत करने का अनुरोध किया गया।
- (xi) प्रारंभिक निष्कर्षों की घोषणा से पहले इच्छुक पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, जिन्हें पहले अधिसूचित किए गए प्रारंभिक निष्कर्षों में प्रकाशित किया गया है, को संक्षिप्तता के परियोजनार्थ इसमें दोहराया नहीं गया है। परन्तु, इच्छुक पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों पर अंतिम निष्कर्षों में विचार किए जाने का प्रस्ताव है।
- (xii) प्राधिकारी ने प्राप्त आंकड़ों की घरेलू पड़ताल (घरेलू उद्योग तथा प्रयोक्ताओं) तथा निर्यातकों की पड़ताल की।
- (xiii) प्राधिकारी ने अपनी संबंधित फाइल को उपलब्ध कराया और इच्छुक पक्षकारों के निरीक्षण हेतु उसे खुला रखा।
- (xiv) इस अधिसूचना में \*\*\* भाग में इच्छुक पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत जानकारी है और प्राधिकारी ने नियमावली के तहत इसी पर विचार किया।
- (xv) यह जांच 1 जनवरी, 2002 से 30 सितंबर, 2002 तक की अवधि के लिए है।
- (xvi) प्राधिकारी ने जहां तक आवश्यक समझा, घरेलू उद्योग, प्रयोक्ता उद्योग और निर्यातकों की मौके पर जांच की।
- (xvii) उत्पादन की अनुकूल लागत और याचिकाकर्ता द्वारा प्रस्तुत जानकारी के आधार पर सामान्य रूप से स्वीकृत लेखा सिद्धांतों पर आधारित भारत में संबद्ध माल के विनिर्माण और बेचने की लागत की गणना करने के प्रयोजन से घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत का विश्लेषण किया गया जिससे कि यह सुनिश्चित किया जाए कि क्या पाटन शुल्क, पाटन मार्जिन की तुलना में घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त कर सकेगा।

(xviii) जांच शुरुआत संबंधी सूचना की प्रतियां व्यापक परिचालन के लिए फिक्की, सी आई आई, एसोचेम इत्यादि में भी परिचालित की गई ।

ख. विचाराधीन उत्पाद एवं समान वस्तु

2. घरेलू उद्योग द्वारा किए गए अनुरोध

(i) मौजूदा याचिका में विचाराधीन उत्पाद कॉपर क्लैड लैमीनेट (सीसीएल) है, कॉपर क्लैड लैमीनेट प्रिंटिंग सर्किट बोर्डों को बनाने के लिए प्रयुक्त किए गए एक पेपर या ग्लस फैब्रिक है । लैमीनेट बहुस्तरीय पेपर अथवा ग्लास फैब्रिक है, जिसे रेजिन का प्रयोग करके जोड़ा अथवा फिक्स किया जाता है । कॉपर फायल को शीट के ऊपर लैमीनेट किया जाता है (दोनों अथवा एक ओर) ताकि लैमीनेट में धारा प्रवाह की क्षमता उत्पन्न हो सके । ग्लस एपोक्सी, पेपर फेनोलिक अथवा कंपोजिट से बने हुए अनेक प्रकार के कॉपर क्लैड लैमिनेट्स हैं । इन्हें आगे कॉपर फायल के साथ लैमिनेट किया जाता है जो अपेक्षानुसार इकतरफा अथवा दुतरफा हो सकता है जो पुनः मोटाई में अलग अलग हो सकता है । हालांकि, फायल की मोटाई मोटे तौर पर समान (18/35/70 माईक्रोन) होती हैं तथापि, विशिष्ट अंतिम अपेक्षा के अनुसार अनेक प्रिप्रेग्स को एक साथ लेमिनेट किया जा सकता है, जिसके परिणामस्वरूप अंतिम उत्पाद की मोटाई अलग-अलग हो जाती है । इस प्रकार जहां अलग-अलग लैमिनेट्स संबद्ध लागत और कीमत (कच्चे माल की लागत में मूल रूप से अंतर के कारण) के संबंध में अलग अलग हो जाते हैं वहीं अलग-अलग प्रकार के लैमिनेट्स समान उत्पादन प्रक्रिया से विनिर्मित किए जाते हैं । सार्वजनिक सुनवाई के बाद घरेलू उद्योग से इस बात को छोड़कर कोई और नया तर्क प्राप्त नहीं हुआ है कि उसे ऐसे कुछ प्रयोक्ता उद्योगों से कतिपय आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए जाने हैं जिन्होंने गुणवत्ता के आधार पर कतिपय ग्रेडों को निकाल देने के लिए कहा हो । याचिकाकर्ता का निवेदन है कि अब इन इच्छुक पक्षकारों का केवल एकमात्र अपुष्ट आरोप है । वास्तव में, एक पक्षकार ने सुनवाई के समय स्वयं यह स्वीकार किया कि इनमें से एक नेमिनेट प्रकार जो 'भविष्य के लेमिनेट' और 'जिनका प्रयोग बढ़ता ही जा रहा है' । यदि मामला ऐसा है तो याचिकाकर्ता को आश्चर्य है कि ये इच्छुक पक्षकार इन प्रकारों को हटा देने की मांग कैसे कर रहे हैं । इनकी बदनीयता यह है कि लगाए गए शुल्कों के निवारण के कुछ तरीके अपना लिए जाएं।

विचाराधीन उत्पाद - निर्यातकों एवं आयातकों द्वारा किए गए अनुरोध

आई पी सी ए, बंगलौर, ए टी एंड एस मैसूर, ई सी आई एल, हैदराबाद, मै0 सुलक्षणा सर्किट्स लि0 हैदराबाद, सन्मार माईक्रोपैक लि0 बंगलौर, मै0 अकास्का इलैक्ट्रानिक्स लि0 नवी मुंबई, मै0 एन एस पी इलैक्ट्रानिक्स लि0 बंगलौर, मल्टीलाईन

इलैक्ट्रानिक्स प्रा० लि० पुणे, गुजरात नर्मदा वैली फर्टिलाइजर्स कं० लि० गुजरात, डैक्कन सर्किट प्रा० लि० पुणे, मल्टीलाईन सर्किट्स मुंबई, मै० यू वी सर्किट प्रा० लि० बंगलौर, मै० शिल्डॉन इलैक्ट्रॉनिक्स एंड इंजीनियरिंग प्रा० लि० बंगलौर, लिनाक्स माइक्रो इलैक्ट्रानिक्स लि० लखनऊ, मै० सर्किट सिस्टम्स इंडिया (प्रा.) लि., मै० जी एन वी एफ सी लि०, आई टी आई लि., बंगलौर, कॉस्मिक इंजीनियरिंग इंटरप्राइज, मै० एपीटोम कंपोनेंट लि०, अहमदनगर, मै० एच आई आर ई एल कंपोनेंट्स (इंडिया) लि०, मै० एसेंट सर्किट्स प्रा० लि० तमिलनाडु, शोगिनी टेक्नोक्राफ्ट्स प्रा० लि०, मै० गर्ग इलैक्ट्रानिक्स हरियाणा, एमको इलैक्ट्रानिक्स लि०, मुंबई तथा अन्य के विचार ।

3.(i) आई पी सी ए ने विचाराधीन उत्पाद के श्रेणीकरण को तीन व्यापक श्रेणियों में लिया है जो भिन्न-भिन्न मोटाई और कॉपर क्लैडिंग वाले पेपर फेनोलिक्स, ग्लास फैब्रिक्स तथा कंपोजिट कॉपर क्लैड लेमिनेट्स हैं । आई पी सी ए का अनुरोध है कि उत्पाद की वास्तविक लागत मोटाई और अन्य गुण धर्मों के अनुसार अत्यधिक भिन्न होगी । अतः याचिका में घरेलू उद्योग का यह दावा कि अलग-अलग मोटाई तथा अन्य गुण धर्मों वाले एक प्रकार के लेमिनेट्स एक ही हैं और वे समान उत्पाद हैं और इसलिए वे तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं, तथ्यतः गलत और त्रुटिपूर्ण हैं उन्होंने प्राधिकारी का ध्यान पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध के नियम 6(1) की ओर आकृष्ट किया है जिसमें उस अंतर के लिए उचित छूट की अपेक्षा की गई है जो कीमत तुलनीयता पर प्रभाव डालता है । उन्होंने आगे यह भी कहना है कि जिन विशिष्ट मोटाई और अन्य गुण-धर्मों वाले लेमिनेट्स का विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जा सकता है, उन्हें वर्तमान जाच के क्षेत्र से अलग रखा जाना चाहिए । बहु-परतीय पी सी बी के विनिर्माण के लिए .075 मि.मी. से .80 मि.मी. के बीच की मोटाई वाले लेमिनेट्स का प्रयोग करना अनिवार्य होता है । इन पी सी बी जिनके इन पतले कोर्स या ऐसे लेमिनेट्स का प्रयोग किया जाता है, की अंतिम मोटाई ग्राहक की अंतिम आवश्यकता के आधार पर .6 मि.मी. से 3.2 मि.मी. के बीच होती है । उनका आगे यह भी कहना है कि निश्चित मोटाई और अन्य गुण वाले लेमिनेट्स को, जिनका विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जा सकता है, को मौजूदा जांच के दायरे से बाहर रखा जाना चाहिए । उनका निवेदन है कि घरेलू उद्योग ऐसे लेमिनेट का उत्पादन नहीं करता है, इसलिए उसे जांच के दायरे से बाहर रखा जाए ।

(ii) मै० गुजरात परस्टार्प उच्च सी टी आई, उच्च टी जी, और हैलोजन मुक्त लेमिनेट, जिसे प्रसिद्ध रूप से हरा लेमिनेट कहते हैं और जिसकी जटिल इलैक्ट्रानिक उपकरणों रक्षा एवं अंतरिक्ष अनुप्रयोगों आदि के लिए आवश्यक विशेषताओं वाले तथा अंतर्राष्ट्रीय उपभोक्ताओं द्वारा अपने प्रिंटेड सर्किट बोर्ड के लिए मांग किए जाने वाली गुणवत्ता के अत्याधुनिक लेमिनेट्स का विनिर्माण नहीं करते हैं । इनका विनिर्माण विशेषरूप से

अंतर्राष्ट्रीय विनिर्माताओं द्वारा किया जाता है और मै0 गुजरात परस्टोर्प ऐसा नहीं कर सकते हैं ।

- (iii) सिंगल साइडेड पी सी बी के आयातक पेपर फेनोलिक लैमिनेट का प्रयोग करते हैं, जो मुख्यतः एफ आर 1 ग्रेड का होता है । कॉपर क्लैड लैमिनेट के इस ग्रेड का प्रयोग आम तौर पर इलैक्ट्रानिक क्षेत्र जैसे टी वी, आडियो आदि की पी सी बी आवश्यकताओं के लिए किया जाता है । पी सी बी विनिर्माताओं के पास उन्हें आपूर्ति किए जाने वाले पी सी बी के लिए प्रयुक्त होने वाले कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के संबंध में निर्णय लेने का कोई अधिकार नहीं है । हम शत-प्रतिशत विश्वास से यह कह सकते हैं कि उपरोक्त एम एन सी तथा एम एन सी आधार वाली भारतीय कंपनियों में से अधिकतर कंपनियों ने अपनी पी सी बी अपेक्षाओं के लिए गुजरात परस्टोर्प को एक लैमिनेट आपूर्तिकर्ता के रूप में मान्यता नहीं दी है ।
- (iv) आयातकों ने प्रसंस्करण के समय लैमिनेट्स में विभिन्न समस्याएं देखी हैं और ये समस्याएं लैमिनेट्स में मोटाई परिवर्तन, ब्लिस्टरिंग कॉपर पील ऑफ, ट्विस्ट, सतह पर निशान, गलत ढंग से तैयार सतह तथा इसी तरह की अन्य समस्याएं हैं । उन्होंने यह भी बताया है कि उन्हें अपने उपभोक्ताओं से पी सी बी के लिए याचिकाकर्ता के लैमिनेट्स का प्रयोग न करने के निर्देश मिले हैं । बहुत से बैचों को अस्वीकार किया गया है और वे गुजरात परस्टोर्प द्वारा की गई आपूर्ति की गुणवत्ता से संतुष्ट नहीं हैं । उन्होंने गुणवत्ता और आपूर्ति में असंगतता का उल्लेख किया है तथा सही समय पर सामग्री की आपूर्ति करने में याचिकाकर्ता की असमर्थता को याचिकाकर्ता से माल न खरीदने का प्रमुख कारण बताया है ।

#### विचाराधीन उत्पाद - प्राधिकारी द्वारा जांच

4. विचाराधीन उत्पाद वर्तमान याचिका में जांच आरंभ संबंधी अधिसूचना में यथा उल्लिखित कॉपर क्लैड लैमिनेट्स (सी सी एल) है, जो कागज़ या ग्लास फ़ैब्रिक या एक किस्म के संश्लिष्ट लैमिनेट्स हैं, जिनका प्रिंटेड सर्किट बोर्ड के निर्माण में प्रयोग होता है और जिनकी विशिष्ट अंतिम आवश्यकता को पूरा करने के लिए प्रयुक्त प्रीपैग्स् की संख्या तथा कॉपर फॉएल की मोटाई एवं प्रीपैग पर इसकी कोटिंग (अथवा दोनों तरफ या एक तरफ) के आधार पर भिन्न-भिन्न प्रकार के कॉपर क्लैड लैमिनेट्स बनाए जा सकते हैं । प्राधिकारी नोट करते हैं कि लैमिनेट्स की भिन्न-भिन्न उप किस्मों में संबद्ध लागत एवं कीमत की दृष्टि से काफी अंतर है ।

5. लैमिनेट्स की विनिर्माण प्रक्रिया में ग्लास फ़ैब्रिक या पेपर फाईबर का उपयुक्त रेजिन के साथ संघेदन, रेजिन को सुखाना तथा प्रीपेग्स को कठोर बनाना, प्रीपेग्स तथा कॉपर फॉएल के प्रयोग से लेमिनेट तैयार करना, प्रीपेग्स को हाइड्रोलिक प्रेस में प्रेस करना तथा कटाई एवं कांट छांट के द्वारा सही आकार देना शामिल है। प्रयुक्त मूल सुदृढीकरण (पेपर या ग्लास), प्रयुक्त बाइंडर की किस्म तथा की गई कॉपर क्लेडिंग के आधार पर इस उत्पाद को पेपर फेनोलिक कॉपर क्लैड लैमिनेट्स, ग्लास एपोकसी कॉपर क्लैड लैमिनेट्स तथा कम्पोजिट कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के नाम से वर्गीकृत किया गया है। संबद्ध वस्तु के कुछ आयातकों ने इंगित किया है कि याचिकाकर्ता 2116 तथा 1080 किस्म के तीन प्रीपेग्स का विनिर्माण नहीं करता है जो 0.7 मि.मी. से कम मोटाई वाले कॉपर क्लेड लैमिनेट्स के विनिर्माण के लिए .075 मिमी. से .080 मिमी. के बीच की मोटाई वाले लैमिनेट्स का प्रयोग करना अनिवार्य होता है। उन्होंने यह भी कहा है कि विस्तारीकरण संबंधी समस्याओं जिनके परिणामस्वरूप कमज़ार हिस्सों, अन्य कमियों के कारण, अस्वीकृति तथा पंजीकरण न होने के कारण उसी विनिर्माता के प्रीपेग्स तथा आंतरिक कोर का प्रयोग करना अनिवार्य होता है। आयातकों की इस शिकायत के उत्तर में याचिकाकर्ता ने इस बात की पुष्टि की है कि 0.8 मिमी. से कम मोटाई वाले लैमिनेट्स के संबंध में भिन्न-भिन्न आपूर्तिकर्ताओं के लैमिनेट्स तथा प्रीपेग्स का मिश्रण प्रयोग करना उचित नहीं होता है। अतः घरेलू उद्योग के दावों, अन्य हितबद्ध पक्षों के उत्तरों तथा रिकार्ड में उपलब्ध सामग्री को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी ने कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के विचाराधीन उत्पाद का दायरा 0.8 मिमी. से 3.2 मिमी. तक की मोटाई तक सीमित रखा है। प्राधिकारी यह भी लगता है कि नेमा (नेशनल इलेक्ट्रानिक्स मैन्यूफैक्चरर्स एसोसिएशन) द्वारा निर्धारित मानकों का ज्यादातर उत्पादकों तथा समान उपभोक्ताओं द्वारा उसी रूप में प्रयोग किया जाता है तथा ये उत्पाद के तकनीकी रूप में प्रयोग किया जाता है तथा यह उत्पाद के तकनीकी मापदंडों का भली भांति वर्णन करता है। अतः प्राधिकारी पुष्टि करता है कि भौजूदा जांच में विचाराधीन उत्पाद 0.8 मिमी. से 3.2 मिमी. (0.8 मिमी. तथा 3.2 मिमी. सहित) मोटाई वाले कॉपर क्लैड लैमिनेट्स हैं और जो पेपर पर आधारित (नेमा ग्रेड एफ आर 1 और 2 तथा एक्स पी सी), ग्लास आधारित (नेमा ग्रेड एफ आर 1 और 2 तथा एक्स पी सी), ग्लास आधारित (नेमा ग्रेड एफ आर 4 एक ओर या दोनों ओर) या कम्पोजिट (नेमा ग्रेड सी ई एम 1) फेनोलिक हो सकते हैं (जिन्हें इसके बाद संबद्ध वस्तु कहा गया है)। 0.8 मिमी. से कम तथा 3.2 मिमी. से अधिक मोटाई तथा ऊपर उल्लिखित नेमा ग्रेडों के अलावा अन्य ग्रेड जांच के दायरे में नहीं आते हैं।

6. प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि कॉपर क्लैड लैमिनेट्स का उत्पादन, बिक्री तथा मापन वर्गमीटर, संख्या, किलोग्राम, शीटों तथा नगों के अनुसार होता है। यह उत्पाद सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम क 7410.21 सीमाशुल्क वर्गीकरण के अंतर्गत आता है। इस उत्पाद पर वर्तमान जांच अवधि में 5% मूल सीमाशुल्क है।

## ग. समान वस्तु

7. याचिकाकर्ता का दावा है कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु तथा संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु में कोई मुख्य अंतर नहीं है। याचिकाकर्ता ने आगे दावा किया है कि उत्पादन में अपनाई गई प्रौद्योगिकी भी समान है, यद्यपि प्रचालन की मात्रा में अंतर हो सकता है। याचिकाकर्ता द्वारा संबद्ध देशों से आयातित संबद्ध वस्तु तथा घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु के उनकी विशेषताओं जैसे भौतिक/यांत्रिक तथा विद्युतीय विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकी, कार्य एवं प्रयोग, उत्पाद विनिर्देशन, वितरण एवं विपणन तथा वस्तु की कीमत एवं टैरिफ वर्गीकरण की दृष्टि से तुलनीय होने का दावा किया गया है। ये दोनों तकनीकी तथा वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं। याचिकाकर्ता ने आगे दावा किया है कि उपभोक्ताओं ने इन्हें एक-दूसरे के स्थान पर प्रयोग किया है। पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तुओं के "संबद्ध देशों" से आयातित माल के समान वस्तु होने का दावा किया गया है। सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात याचिकाकर्ता ने यह भी कहा है कि इस बात का उल्लेख करना भी संगत होगा कि जहां ये पक्षकार क्वालिटी समस्याओं के संबंध में अनेक तर्क कर रहे हैं वहां इन्हीं पक्षकारों ने याचिकाकर्ता से पर्याप्त मात्रा में खरीद की है और वास्तव में इन्होंने या तो भुगतान करने में काफी विलंब कर दिया है अथवा भुगतान किया ही नहीं।

8. आयातकों, उपभोक्ताओं तथा निर्यातकों का दावा है कि याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित वस्तु संबद्ध देशों से आयातित वस्तु के तुलनीय नहीं है। उन्होंने याचिकाकर्ता द्वारा बेचे गए उत्पाद में बहुत सी भौतिक एवं रासायनिक खामियां बताई हैं और आगे यह भी बताया है कि उनके उत्पाद प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय जांच एजेंसियों तथा प्रयोक्ता उद्योग की प्रमुख कंपनियों जो अधिकतर अंतर्राष्ट्रीय स्तर की हैं द्वारा प्रमाणित नहीं हैं। उन्होंने दोहराया है किये प्रयोक्ता उद्योग स्वयं अपने मानकों तथा उन स्रोतों, जहां से संबद्ध वस्तुएं मंगाई जाती हैं, को निर्दिष्ट करते हैं। उन्होंने यह भी बताया है कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित संबद्ध वस्तुएं प्रमुख हार्डवेयर विनिर्माताओं द्वारा स्थापित मानकों पर खरी नहीं उतरती हैं और इस प्रकार वे घरेलू उद्योग से यह सामग्री नहीं ले सकते हैं। इस तरह के तर्क भी दिए गए हैं कि कॉपर क्लैड लैमिनेट्स की मोटाई भिन्न-भिन्न होती है और मूल सामग्री कॉपर फॉएल की मोटाई तथा इसमें प्रयुक्त प्रीप्रेस किस्मों की लागतों में अंतर होता है और इसलिए इन्हें समान वस्तु नहीं माना जा सकता है तथा घरेलू रूप से विनिर्मित वस्तु के साथ किसी भी तरह से तुलना में इन कारकों को ध्यान में रखना आवश्यक है।



9. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों की जांच की है तथा घरेलू उद्योग के निवेदनों की भी जांच की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि नियम 2(घ) में समान वस्तु की निम्नानुसार परिभाषा की गई :-

“समान वस्तु का अभिप्राय किसी ऐसी वस्तु से है जो भारत में पाटन किए जाने के लिए जांच की जा रही वस्तु के साथ प्रत्येक दृष्टि से समान या समरूप हो या ऐसी वस्तु की अनुपस्थिति में किसी ऐसी अन्य वस्तु से है जो यद्यपि प्रत्येक दृष्टि से समान न हो परन्तु उसकी विशेषताएं जांचाधीन वस्तु की विशेषताओं के अत्याधिक समानरूप हों।”

प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकाकर्ता द्वारा उत्पादित तथा आपूर्ति की गई संबद्ध वस्तुओं की तकनीकी विशिष्टताएं संबद्ध देशों से आयातित वस्तुओं के साथ तुलनीय हैं तथा ये दोनों बनावट, रासायनिक गुणों तथा प्रयोग में एक दूसरे के स्थान पर प्रतिस्थापनीय हैं। यद्यपि घरेलू उद्योग द्वारा आपूर्ति किए गए संबद्ध माल की क्वालिटी में सततता के अभाव का मुद्दे की ऐसे विभिन्न आयातकों तथा प्रयीक्ताओं ने पुष्टि की है जो भारत में प्रिंटेड सर्किट बोर्डों के स्वयं उत्पादक हैं। तथापि यह माल ऐसे कारकों को छोड़कर अन्य विभिन्न कारकों के अनुसार सदृश्य है जिनका उल्लेख पहले ही कर दिया गया है और जिन्हें प्राधिकारी द्वारा जांच के अधीन वाले उत्पाद में हटा दिया गया है। जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध माल की असदृश्य तथा खराब क्वालिटी के संबंध में विभिन्न इच्छुक पक्षकारों के दावे हैं, प्राधिकारी यह निर्णय देता है कि इन दोनों उत्पादों के प्रयोग में आने वाले अंतर की इस बात को छोड़कर किसी इच्छुक पक्षकार द्वारा पूरी तरह से विवेचना नहीं हुई है कि समय-समय पर निर्धारित विभिन्न मानदंडों के अनुसार क्वालिटी की सततता की कोई समस्या नहीं है।

10. समान वस्तु के निर्धारण के लिए प्राधिकारी को यह देखने की आवश्यकता है कि क्या विभिन्न किस्में मापदंडों अर्थात् उत्पाद विशिष्टता, बनावट तथा तकनीकी विशेषताएं विनिर्माण प्रक्रिया तथा प्रौद्योगिकी, संयंत्र तथा उपकरण, कार्य एवं उपयोग, उनकी प्रतिस्थापनीयता, टैरिफ वर्गीकरण तथा ग्राहक अनुभूति के अनुसार तुलनीय है। प्राधिकारी सहमत हैं कि विभिन्न प्रकार के लैमिनेट संयोजित लागतों तथा कीमतों के अनुसार उल्लेखनीय रूप से भिन्न हैं। ये भिन्नताएं भिन्न-भिन्न कच्ची सामग्री तथा परतों जिनके अलग-अलग लैमिनेट होते हैं, के उपयोग के परिणामस्वरूप होती हैं। तथापि, अलग-अलग मोटाई तथा किस्मों वाले टैरिफ वर्गीकरण, कार्य-कलाप सहित विभिन्न प्रकार के लैमिनेटों के लिए संयंत्र तथा उपकरण विनिर्माण प्रक्रिया भी समान हैं और प्रयोग कमोवेश एकसमान है। यद्यपि विभिन्न परीक्षणों के अनुसार उत्पादन प्रक्रिया में काफी अंतर है जो निर्यातकों द्वारा प्रत्येक निर्माण स्तर पर किया जाता है और जो विभिन्न पी सी बी विनिर्माताओं द्वारा अंतिम प्रयोग के अनुसार बहुत ही महत्वपूर्ण है। तथापि विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा दिए

गए तर्कों तथा रिकॉर्ड में उपलब्ध सामग्री को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी निर्णय देता है कि संबद्ध माल (सीसीएल) ग्लास एपोक्सी से संबंधित (एफ आर 4 डी/एस), घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विभिन्न मोटाई (0.8 एम एम और 3.2 एम एम के बीच) से संबंधित पेपर फेनोलिक्स (एफ आर 1 एवं 2) तथा एक्स पी सी तथा कम्पोजिट (सी ई एम -1) संबद्ध देशों से आयातित तथा संबद्ध देशों में बेचे गए माल के समान वस्तु हैं।

#### घ. घरेलू उद्योग

11. चूंकि सार्वजनिक सुनवाई और प्रारंभिक निष्कर्षों के पश्चात् स्थिति के मुद्दे के संबंध में कोई नया तर्क प्राप्त नहीं हुआ है, अतः प्राधिकारी यह पुष्टि करता है कि याचिकाकर्ता उस वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का प्रमुख भाग उत्पादन करता है। इसलिए वह पाटनरोधी नियमावली के नियम 2(ख) के तहत घरेलू उद्योग है। तदनुसार, याचिकाकर्ता उपर्युक्त नियमावली के नियम 5(3)(क) के अनुसार घरेलू उद्योग की ओर से याचिका दायर करने की स्थिति के मानदंड को पुष्ट करता है।

#### ङ. निर्धारित न्यूनतम सीमा

12. यह निश्चित करने के लिए कि जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से हुए आयात निर्धारित न्यूनतम सीमा के स्तर से अधिक हैं, के संबंध में प्राधिकारी आई बी आई एस द्वारा उपलब्ध कराए गए संबद्ध देशों से सौदेवार आंकड़ों का संदर्भ लिया है।

संबद्ध देशों से आयात स्रोत आई बी आई एस		
देश	एस क्यू एम आयात	संबद्ध देशों से आयात का प्रतिशत
चीन जनवादी गणराज्य	355556	29.38
हांगकांग	91724	7.58
ताइवान	135281	11.18
सिंगापुर	22073	1.82
थाईलैंड	21713	1.79
फिलीपींस	261616	21.62
कोरिया गणराज्य	302919	25.03

प्राधिकारी यह निर्णय देता है कि पाटनरोधी नियमावली के नियम 14 के अर्थ के भीतर थाईलैंड तथा सिंगापुर से होने वाले आयात निर्धारित न्यूनतम सीमा से अधिक हैं ।

च. विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन - गुणवत्ता मुद्दे - आयातकों तथा निर्यातकों द्वारा किए गए निवेदन

13. (क) लेमिनेट्स के विभिन्न ग्रेडों का निर्माण अंतिम प्रयोक्ताओं की अपेक्षाओं के अनुसार विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है । ऐसे आधारिक विनिर्देशन जो नीमा विनिर्देशनों के अनुसार जरूरत पूरा करने के लिए आवश्यक हैं ये हैं : क) चमकदर, ख) अधिकतम प्रचालन तापमान, ग) तुलनात्मक ट्रैकिंग अनुसूची । मै0 जीपीईएल मूल रूप से एफ आर-4 लेमिनेट और अन्य ग्रेड जैसे एफआर-1, एफआर-2, सीईएम-1 का विनिर्माण करता है और एक्सपीसी क्रियाकलाप की प्रक्रिया में है । ये ग्रेड उद्योग तथा नीमा विनिर्देशनों की अपेक्षाओं को पूरा नहीं करते हैं । उन्होंने विभिन्न लेमिनेट विनिर्माताओं के आंकड़ेपृष्ठ संलग्न किए हैं जिनका उल्लेख नीचे किया गया है । अधिकतम लेमिनेट प्रयोक्ता न्यूनतम अपेक्षा का उल्लेख करते हैं जो नीचे दिए गए हैं :-

ग्रेड                      यूएल वर्गीकरण                      संचालन तापमान                      सीटीआई मूल्य

एक्सपीसी

जीपी-1200

सीसी-3610	94एचबी	130 डिग्री	600 वा
एनएस-6711सीटी	94एचबी	130 डिग्री	600 वा
एमसीएल-43	94एचबी	130 डिग्री	200 वा
डीएस-1125	94एचबी	130 डिग्री	130 वा

एफआर-1

जीपी-2200	94वीओ	105 डिग्री	-
सीसी-3710	94वीओ	130 डिग्री	600 वा
एनएस-6732सीटी	94वीओ	130 डिग्री	525 वा
एमसीएल-437एफ	94वीओ	130 डिग्री	600 वा
डीएस-1107ए	94वीओ	130 डिग्री	600 वा

**एफआर-2**

जीपी-2500	94वीओ	-	175 वा
सीसी-3700	94वीओ	105 डिग्री	180 वा
एनएस-6704सीटी	94वीओ	105 डिग्री	600 वा
एमसीएल-417एफ	94वीओ	105 डिग्री	600 वा
डीएस-1202	94वीओ	105 डिग्री	600 वा

**सीईएम-1**

जीपी-5100	94वीओ	105 डिग्री	200 वा
सीसी-5100	94वीओ	130 डिग्री	200 वा
एनएस-4791	94वीओ	130 डिग्री	200 वा
एमसीएल-ई479	94वीओ	130 डिग्री	230 वा
डीएस-7106	94वीओ	130 डिग्री	300 वा

**एफआर-4**

जीपी-6300	94वीओ	130 डिग्री	200 वा
सीसी-5400	94वीओ	130 डिग्री	100 वा
एनएस-4700	94वीओ	130 डिग्री	150 वा
एमसीएल-ई67	94वीओ	130 डिग्री	198 वा
डीएस-7405	94वीओ	130 डिग्री	250 वा

शीर्षक	जीपी - गुजरात परस्टार्प
	सीसी - चिंग काँग
	एनएस - शिन सुंग
	एमसीएल- हिटैची केमिकल
	डीएस - दूसान

चूंकि मै0 जीपीईएल के एक्सपीसी, एफआर-1 तथा सीईएम-1 उत्पाद न्यूनतम तकनीकी विनिर्देशन तथा अपेक्षाओं को पूरा नहीं करते हैं अतः इन्हें मौजूदा जांच तथा शुल्क के दायरे से हटा देना आवश्यक है ।

ख) इसके अलावा, कुछ विशेष जरूरतें जैसे उच्च ग्लास पारगमन जो 145 डिग्री से अधिक हों, ग्रीन लेमिनेट्स (हेलोजन मुक्त) का विनिर्माण याचिकाकर्ताओं द्वारा नहीं किया जाता है। अतः इन लेमिनेट्स को मौजूदा जांच के दायरे से छूट दी जाए।

ग) मैग्नेट यूजर्स एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, 2003 (157) ई.एल.टी. 150 के मामले में "हार्ड फेराइट रिंग मैग्नेट" नामक संबद्ध उत्पाद शामिल था जिस पर रिंग मैग्नेट के "सभी ग्रेडों तथा आकारों पर" पाटनोधी शुल्क लगाया गया था जिसमें घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित माल शामिल नहीं था। सीगैट न्यायाधिकरण ने निर्णय दिया कि रिंग मैग्नेट के उन ग्रेडों को शामिल करने का कोई औचित्य नहीं है जिनका उत्पादन भारत में नहीं होता है। अतः उन्हें पाटनरोधी शुल्क के दायरे से हटा दिया गया। वीडियोकोन नर्मदा ग्लास बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2003(151) ईएलटी.80 के मामले में संबद्ध उत्पाद "स्ट्राटियम कार्बोनेट" शामिल था। न्यायाधिकरण ने निर्णय दिया कि दानेदार स्ट्राटियम कार्बोनेट का विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया गया, इसलिए न्यायाधिकरण ने दानेदार स्ट्राटियम कार्बोनेट जिसका उत्पादन भारत में नहीं हुआ को शामिल करने का कोई औचित्य नहीं पाया। अतः उसे पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से हटा दिया। ऑक्सो एल्कोहल्स इंडस्ट्रीज एसोसिएशन बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी 2001(130) ई.एल.टी. 58 के मामले में संबद्ध उत्पाद "आक्सो एल्कोहल" था जिसमें "सामान्य हैक्सानोल" पर इस आधार पर पाटनरोधी शुल्क लगाया गया कि सामान्य हैक्सानोल के प्रयोग द्वारा विनिर्मित उत्पाद किसी अन्य ऑक्सो एल्कोहल द्वारा विनिर्मित उत्पादों का प्रतिस्थापन हो सकता है। न्यायाधिकरण ने इस आधार पर सामान्य हैक्सानोल पर लगाए जा रहे शुल्क को हटा दिया कि सामान्य हैक्सानोल घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित अथवा उत्पादित होने वाला उत्पाद नहीं है। अन्य मामलों में भी न्यायाधिकरण ने ऐसे उत्पाद पर शुल्क हटा दिया कि जिसका विनिर्माण भारतीय उद्योग (इंडियन रिफ़ैक्टरी मामला, बिरला पेरिकलेज मामला, आदि) द्वारा नहीं हो रहा था।

घ) विभिन्न इच्छुक पक्षकारों ने उल्लेख किया है कि याचिकाकर्ता कंपनी एक रूग्ण कंपनी है जो पिछले कई वर्षों से नुकसान उठा रही है और कहा है कि घरेलू उद्योग को चाहिए कि वह इसकी रूग्णता तथा तथाकथित पाटित आयातों के कारण हुई क्षति में अलग-अलग अंतर करे। उन्होंने आगे यह भी स्पष्ट किया कि यद्यपि पाटनरोधी जांच में क्वालिटी का कोई मुद्दा नहीं है अतः घरेलू उद्योग कीमत की वजह से आर्डर प्राप्त नहीं कर पा रही है बल्कि वे स्वीकार्य क्वालिटी माल की सतत आपूर्ति नहीं कर सके। विभिन्न इच्छुक पक्षकारों ने विस्तृत विश्लेषणात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत की है जिसमें यह इंगित किया गया कि घरेलू उद्योग दी गई समय-सीमा के अंदर संबद्ध माल की सतत रूप से पूर्ति और क्यों स्वीकृत मानदंडों के अनुसार सतत क्वालिटी क्यों नहीं दे पाए हैं। उन्होंने आगे यह भी कहा है कि उन्हें याचिकाकर्ता कंपनी के उचित क्वालिटी माल की सप्लाई करने में

असफल होने के बाद वैकल्पिक स्रोतों की तलाश करने का सहारा लेना पड़ा है। हालांकि विचाराधीन उत्पाद से घटिया क्वालिटी उत्पादों में अंतर के वास्तविक आधार के रूप में पाटनरोधी के न्यायक्षेत्र की पहचान क्वालिटी के लिए नहीं की जा सकी अतः तथ्य यह है कि इस उद्योग में घटिया क्वालिटी पीसीबी विनिर्माताओं के लिए घातक है क्योंकि घना पीसीबी खाली पीसीबी से कई गुना अधिक है और पीसीबी विनिर्माता पर उपभोक्ता द्वारा पीसीबी लागत के बराबर जुर्माना लगाया जाता है। आगे यह भी कहा गया है कि घरेलू उद्योग के घटक लगातार घटिया क्वालिटी देते रहे हैं। उन्होंने जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा जारी गोपनीय साख-पत्रों को भी संलग्न किया है। उन्होंने यह भी उल्लेख किया है कि अधिकांश संबद्ध माल उच्च टीजी संबद्ध माल (135 से अधिक टी जी), सी टी आई 400 और उससे अधिक का एफआर iv, एफआर-i तथा एफआर- ii जिसमें 600 से अधिक सी टी आई शामिल है और एफआर-i तथा एफआर- ii जिसमें 70 से अधिक तांबे की मोटाई शामिल है और ग्रीन लेमिनेट सहित है और इनका विनिर्माण घरेलू उद्योग द्वारा नहीं किया जाता है।

ड.) विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा यह भी उल्लेख किया गया है कि संबद्ध माल के अन्य घरेलू उत्पादक मैसर्स बेकलाइट हाइलैम के सामने गंभीर क्वालिटी मुद्दे थे और उन्होंने ऐसा रिकार्ड बताया है कि जिसमें मैसर्स बेकलाइट हाइलैम लिमिटेड द्वारा सप्लाई किए गए माल के कारण सामने आ रही समस्याएं दर्शाई गई हैं। उन्होंने आगे यह भी अभ्यावेदन किया है कि मैसर्स बेकलाइट हाइलैम को हो रही क्षति का संबंध स्पष्ट रूप से आयातों से नहीं है।

च) इस याचिका में केवल एकमात्र याचिकाकर्ता एक बीआईएफआर कंपनी है। यह कंपनी जून, 1997 में बीआईएफआर में चली गई। पाटनरोधी नियमावली 5 का नियम 2 सुस्पष्ट है। पाटन का निदान तब हो सकता है यदि पाटन से क्षति हो रही हो :-

“ इस बात को आवश्यक रूप से व्यक्त किया जाना चाहिए कि पाटन के प्रभाव के जरिए पाटित आयातों और घरेलू उद्योग के निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता द्वारा ”

छ) मै0 गुजरात परस्टार्प का मामला 1997 से बीआईएफआर में है इसलिए यह दिखाने का दायित्व उनके ऊपर है कि समस्या यह नहीं है कि उन्हें बीआईएफआर में पहले स्थान पर रखना है जो अपनी लगातार क्षति, यदि कोई हो, दर्शाने के उत्तरदायी हों बल्कि इसके स्थान पर तथाकथित पाटन जिससे उन्हें क्षति हो रही है। इसके अलावा कुछ और दिखाना कानून के विरुद्ध है।

ज) पीसीबी उद्योग की संकटपूर्ण विशेषता यह है कि प्रयोग किए जा रहे कॉपर क्लैड लैमिनेट को उपभोक्ता अवश्य स्वीकार करें। इसकी सर्वोत्तम तुलना ऐसे दर्जी की तुलना से करनी होगी जहां वह सामान के ब्राण्ड पर उपभोक्ताओं की जरूरतों के अनुसार काम करे। यह पर्याप्त नहीं है कि दर्जी ब्राण्ड को किसी समरूप अथवा बिल्कुल वैसे ही ब्राण्ड में बदल दे। उपभोक्ता यह निश्चित कर देता है कि वैसा ही माल ऐसी मिल का हो जहां से वह सामान मिलता हो। इसी प्रकार, इस उद्योग में भी यदि पीसीबी उत्पादक अपनी पसंद के कॉपर क्लैड लैमिनेट को प्रतिस्थापित करे इसके अलावा यह वित्तीय जुर्माना की जिसे वह वहन कर सके, ऐसे माल को उपभोक्ता द्वारा स्वीकृति नहीं दी जा सकेगी। ऐसे पहलू को माननीय निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के सभी अर्थक्षम स्रोतों पर पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से पहले ध्यान में रखें।

#### घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

14. (क) याचिकाकर्ता ने विस्तृत जानकारी पहले ही प्रदान कर दी है जिसमें यह दर्शाया गया है कि संबद्ध देशों से संबद्ध माल के पाटन की वजह से घरेलू उद्योग को वास्तविक हानि हुई है। निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इस संबंध में एक विस्तृत निष्कर्ष पहले ही रिकॉर्ड कर दिया है जिसे आधार माना गया है। सभी सामूहिक अथवा संचयी कारक यह साबित करते हैं कि घरेलू उद्योग को पाटित आयातों के कारण वास्तविक हानि हुई है।

ख) मौखिक सुनवाई के समय विभिन्न पक्षकारों द्वारा अनेक तर्क प्रस्तुत किए गए हैं। लेकिन यह प्रारंभिक निष्कर्ष से पहले उनके द्वारा पहले ही प्रस्तुत तर्कों की पुनरावृत्ति है। अतः उन्हें निर्दिष्ट प्राधिकारी ने प्रारंभिक निष्कर्ष में पहले ही शामिल कर दिया था। क्षति तथा कारणात्मक संबंध के बारे में किसी भी पक्षकार ने कोई नया तर्क नहीं दिया है। यदि मामला ऐसा है तो निर्दिष्ट प्राधिकारी कृपया अपने अंतरिम निष्कर्ष और शुल्कों में उपयुक्त वृद्धिकारी संशोधन से शुल्कों की पुष्टि करें।

ग) घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति अन्य बातों के साथ-साथ और घरेलू उद्योग द्वारा पहले ही उठाए गए मुद्दों के अलावा बिक्रियों की तुलना में वृद्धिजनक बकाया भुगतान कर दिए जाएं। घरेलू उद्योग को मिलने वाले भुगतान को अनेक पक्षकारों ने रोक दिया है (संबंधित जानकारी गोपनीय आधार पर अलग से प्रदान की जा रही है)।

घ) याचिकाकर्ता ने मौजूदा जांच के प्रयोजनार्थ सभी संगत जानकारी पहले ही प्रदान कर दी है। याचिकाकर्ता ऐसी और भी जानकारी प्रदान करने का इच्छुक है जिसे निर्दिष्ट प्राधिकारी मौजूदा मामले में संगत समझें।

ड.) हालांकि किसी भी विरोधी पक्षकार ने कोई नया तर्क नहीं दिया है अतः याचिकाकर्ता ऐसे किसी भी मुद्दे पर विस्तृत पुनरुत्तर देना चाहेगा जिसे ये पक्षकार मौजूदा मामले में उठाना चाहेंगे ।

खुलासे के बाद घरेलू उद्योग की प्रस्तुतियां:

15क. समान वस्तु तथा उच्च टीजी, उच्च सीटीआई तथा अन्य विशेष लैमिनेटों के बारे में अन्य इच्छुक पक्षों द्वारा दी गई प्रस्तुतियों के संबंध में, घरेलू उद्योग ने बताया कि जीपीईएल ने इस प्रौद्योगिकी को नहीं अपनाया है यद्यपि उसमें इन विशेष लैमिनेटों को लाने की क्षमता है बशर्ते आवश्यकता के अनुरूप यथोचित मात्रा में इसकी मांग हो । जहां तक गुणवत्ता की समस्या का संबंध है, घरेलू उद्योग ने बताया है कि यह एक व्यक्तिपरक मुद्दा है और इसे उचित रूप से तैयार नहीं किया गया है । उन्होंने इसमें और जोड़ते हुए कहा कि यहां तक कि आयातित लैमिनेटों के लिए भी शत-प्रतिशत रूप से त्रुटिरहित होने का दावा नहीं किया जा सकता । जहां तक तथ्यों का संबंध है कि जीपीईएल द्वारा प्रौद्योगिकी उन्नयन को लागू नहीं किया गया है, उन्होंने यह भी कहा कि उन्होंने व्यापक निवेश और बीआईएफआर का एकक बनने के आह्वान किया है, जो संभव नहीं हो सकेगा । उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय पीसीबी बाजार का आकार इतना सार्थक नहीं है तथा इनके भुगतान का तरीका भी इतना असंतुलित है कि कोई भी रेसिन मिश्रण, प्रिप्रेग तैयार करने तथा वैक्यूम प्रैसिंग में नवीनतम उपकरण व प्रौद्योगिकी स्थापित करते हुए विश्व स्तरीय सुविधा में निवेश नहीं करेगा ।

खुलासे के बाद अन्य इच्छुक पक्षों (आयातकों) की प्रस्तुतियां:

15ख. संबद्ध वस्तुओं के संबंध में, उन्होंने टिप्पणी की कि मैसर्स जीपीईएल के मापदण्ड तथा विशेषताएं इनके समान नहीं हैं, जो समान वस्तु के मामले से संबंधित हैं । उन्होंने कहा कि तीनों प्रकार के लैमिनेटों को एक साथ जोड़ना इस क्षेत्र की स्थापित अधिकारिता के मद्देनजर अमान्य व अधारणीय है । कई आयातकों द्वारा यह भी कहा गया कि घरेलू उद्योग द्वारा कोई वैध



तर्क नहीं दिया गया है और उनके द्वारा उठाए गए मूल बिन्दुओं का भी उत्तर नहीं दिया गया । क्षति के मुद्दे पर, भिन्न किस्मों से संबंधित संबद्ध वस्तुओं को एकसाथ नहीं जोड़ा जा सकता, क्योंकि उनका प्रयोग भिन्न है । मात्रात्मक क्षति के संबंध में, यह कहा गया कि मैसर्स जीपीईएल, पिछले कई सालों से एक गंभीर उत्पादक नहीं था और न ही कभी उसका भारतीय बाज़ार में महत्वपूर्ण अंश था । वर्ष 1995 से इसका उत्पादन अपनी क्षमता के 5% से भी कम था और भारतीय बाज़ार में इसका योगदान पूर्णरूप से काफी अमहत्वपूर्ण था । उन्होंने यह भी कहा कि इसके कारण हुई हानि आयात के कारण नहीं हैं क्योंकि यह पिछले कई वर्षों से घाटे में चल रही है और इसका मामला बीआईएफआर के सुपुर्द है । यह आयात के अतिरिक्त किसी अन्य कारण से हो सकती है । साक्ष्यों के साथ यह भी जोड़ा गया कि आज की तारीख तक घरेलू उद्योग के बने रहने में रुकावट आ रही है और कॉपर क्लैड लैमिनेट के एकल विनिर्माण एकक के बंदीकरण से पहले से लागू शुल्क को वापिस लिया जा सकता है । इसलिए, उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि घरेलू उद्योग की क्षति तथा संबद्ध देशों से अभिकथित पाटित आयात के बीच कोई कारणात्मक संबंध नहीं है । उनके द्वारा यह भी कहा गया कि निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा जांच को समाप्त किया जाना चाहिए क्योंकि हो रही क्षति इन कारणों से नहीं है, घरेलू उद्योग के बंद होने के प्रमुख कारण अपनी अपर्याप्तता है और यह क्षति किसी वास्तविक अथवा प्रत्यक्ष आशंका के कारण नहीं है और जांच को जारी रखना याचिकाकर्ता को किसी प्रकार का लाभ नहीं देगा क्योंकि वे पहले ही अपने इस प्रभाग बंद कर चुके हैं । उन्होंने मैसर्स गुजरात पैरस्टार्प इलैक्ट्रानिक्स लि. द्वारा भेजे गए बंदीकरण के नोटिस की एक प्रति संलग्न की और सचिव, श्रम व रोजगार विभाग, गांधीनगर को संबोधित करते हुए उन्हें सूचित किया कि संलग्नक में बताए गए कारणों से दिनांक 3 दिसंबर 2003 से घरेलू उद्योग को बंद करने का निर्णय लिया गया है ।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

15ग प्राधिकारी ने अंतिम निष्कर्षों में उपयुक्त शीर्षकों के तहत इन सभी मुद्दों की जांच की है ।

सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत तथा पाटन मार्जिन :

16. सीमा शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 9 क (1) 1 के तहत, किसी वस्तु के संबंध में सामान्य मूल्य का अर्थ है:-

- उप-धारा(6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश अथवा क्षेत्र में खपत के प्रयोजनार्थ समान वस्तु के लिए व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में यथा निर्धारित तुलनीय कीमत, अथवा:
- जब निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में समान वस्तु की कोई बिक्रियां नहीं होती हैं अथवा जब निर्यातक देश अथवा क्षेत्र के घरेलू बाजार में बाजार की किसी विशेष स्थिति अथवा बिक्री की कम मात्रा के कारण ऐसी बिक्रियों की उचित तुलना नहीं की जा सकती, तो सामान्य मूल्य या तो:
- उप-धारा(6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार निर्यातक देश अथवा क्षेत्र अथवा किसी तीसरे उचित देश से निर्यातित समान वस्तु की यथानिर्धारित तुलनीय प्रतिनिधि कीमत होगी: अथवा
- उप-धारा (6) के तहत बनाए गए नियमों के अनुसार स्रोत देश में प्रशासनिक, बिक्री तथा सामान्य लागतें तथा लाभ की उचित वृद्धि सहित कथित वस्तु की यथानिर्धारित उत्पादन लागत होगी ।

परंतु मूल देश को छोड़कर किसी अन्य देश से वस्तु के आयात के मामले में तथा जहां निर्यातक देश से वस्तु को सिर्फ यानान्तरिक किया गया हो अथवा ऐसी वस्तु का निर्यातक देश में उत्पादन नहीं कि जाता हो अथवा निर्यातक देश में कोई तुलनीय कीमत नहीं हो तो सामान्य मूल्य का निर्धारण मूल देश में उसकी कीमत को ध्यान में रखते हुए किया जाएगा ।

17. प्राधिकारी ने धारा 9 क(1) 1 के अनुसार, सामान्य मूल्य के निर्धारण के प्रयोजनार्थ सभी ज्ञात निर्यातकों को प्रश्नावलियां भेजी । कुछेक निर्यातकों ने निर्यातकों को जारी किए गए पत्र तथा निर्यातक प्रश्नावली के अनुसार अपेक्षित प्रपत्र में तथा तरीके से प्रश्नावली का जवाब दिया है ।

## 1. मै0 दूसान कॉरपोरेशन, कोरिया जन. गण.

मै0 दूसान कॉरपोरेशन ने निर्यातक प्रश्नावली में वर्णित विभिन्न परिशिष्टों के संबंध में सूचना देते हुए निर्यातक प्रश्नावली का जवाब दिया है। प्राधिकारी ने सार्वजनिक सुनवाई के बाद उत्पादन लागत, घरेलू बिक्री कीमत और निर्यातक द्वारा दावे किए गए सभी समायोजनों सहित निर्यात कीमत के संबंध में सहयोगकर्ता निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सभी आंकड़ों की पड़ताल की है। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा किए गए दावे के अनुसार कारखानागत कीमत के लिए अपेक्षित सभी समायोजन करने के बाद सहयोगकर्ता निर्यातक के संबंध में सामान्य मूल्य का आंकलन किया है। इसी प्रकार, प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा किए गए दावे के अनुरूप विभिन्न समायोजनों की अनुमति देने के बाद सहयोगकर्ता निर्यातक की कारखानागत निर्यात कीमत का आंकलन कारखानागत स्तर पर निवल निर्यात कीमत के निर्धारण करते समय कर दिया है। प्राधिकारी ने कारखानागत स्तर पर सामान्य मूल्य और कारखानागत निर्यात कीमत के बीच तुलना करने के बाद संबद्ध माल के विभिन्न ग्रेडों (एन ई एम ए) तथा कॉपर फॉएल की मोटाई के लिए पाटन मार्जिन का परिकलन किया है। यह तुलना जांच अवधि के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा विनिर्मित तथा भारत को निर्यातित संबद्ध माल की तुलनीय किस्म/ग्रेड/ प्राप्त किया जा सके। इस प्रकार भारित औसत समग्र पाटन मार्जिन का निर्धारण अलग-अलग किस्मों पर नकारात्मक पाटन को समाप्त किए बिना प्रत्येक किस्म पर प्राप्त पाटन की गणना द्वारा किया गया। इस तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा संबद्ध माल के पाटन का पता चला। निर्यात कीमत के प्रतिशत के रूप में व्यक्त भारित औसत पाटन मार्जिन निर्धारित किया गया है।

## 2. कोरिया जन.गण. से अन्य निर्यातक

प्राधिकारी नोट करते हैं कि कोरिया जन.गण. से अन्य निर्यातकों में से किसी ने भी निर्यातक प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचकाकर्ता द्वारा किए गए दावे पर भी अन्य हितबद्ध पक्षकार/पक्षकारों द्वारा विवाद नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों के तहत सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसलिए मूल देश में अनुमानित उत्पादन लागत के संबंध में उपलब्ध सूचना तथा उचित समायोजनों के पश्चात् बिक्री, प्रशासनिक तथा सामान्य खर्च को संबद्ध वस्तुओं का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में लिया गया है। कमीशन, समुद्री भाड़े, इत्यादि के लिए लागू समायोजनों को पूरा करने के पश्चात् जांच अवधि के दौरान अधिमानी औसत निर्यात कीमत को गणना में लेते हुए कारखाना निकासी निर्यात कीमत परिकलित की गई है तथा उसके पश्चात् और सहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन साबित किया गया है।

### 3. मै0 इसोला फिलिपींस, फिलिपींस

प्रारंभिक निष्कर्षों के बाद इस निर्यातक ने प्रश्नावली का संपूर्ण प्रत्युत्तर प्रस्तुत किया और प्राधिकारी ने सार्वजनिक सुनवाई के बाद सामान्य मूल्य तथा कारखानागत निर्यात कीमत का निर्णय करने के लिए निर्यातक द्वारा दावा किए गए समायोजनों और उत्पादन लागत, घरे बिक्रियां, भारत को निर्यात बिक्रियों के संबंध में निर्यातक द्वारा प्रस्तुत आंकड़ों की पड़ताल की। प्राधिकारी ने निर्यातक द्वारा किए गए दावे के अनुरूप कारखाना निकासी स्तर पर किए जाने वाले सभी समायोजनों को पूरा करने बाद निर्यातक को सहयोग देने के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। इसी प्रकार, प्राधिकारी ने कारखाना निकासी स्तर पर निवल निर्यात कीमत परिकलित करते समय निर्यातक द्वारा किए गए दावे के अनुरूप विभिन्न समायोजनों की अनुमति प्रदान करने के पश्चात् सहयोगी निर्यातक का कारखाना निकासी निर्यात कीमत का मूल्यांकन किया है। प्राधिकारी ने निर्माण स्तरों परांत सामान्य मूल्य तथा कारखाना निकासी स्तर पर निर्यात कीमत के बीच तुलना करते हुए विभिन्न ग्रेडों (एन ई एम ए) तथा संबद्ध वस्तुओं के कॉपर फॉएल की मोटाई के लिए पाटन मार्जिन का परिकलन किया है। यह तुलना जांच अवधि के दौरान उत्पादकों/निर्यातकों द्वारा विनिर्मित तथा भारत को निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के प्रत्येक किस्म/ग्रेड/मोटाई की अधिमानी औसत बिक्री कीमत पर आधारित था, जिसके लिए संबद्ध वस्तुओं का तुलनीय किस्म/ग्रेड प्राप्त किया जा सके इस प्रकार, अधिमानी औसत समग्र पाटन मार्जिन का निर्धारण अलग-अलग किस्मों के संबंध में पाए गए ऋणात्मक पाटन को शून्य न मानते हुए प्रत्येक किस्म के संबंध में पाए गए पाटन को परिकलित करके किया गया था। तुलना से जांच अवधि के दौरान निर्यातक द्वारा संबद्ध वस्तुओं के पाटन की जानकारी प्राप्त हुई।

### 4. फिलीपीन्स के अन्य निर्यातक

प्राधिकारी नोट करते हैं कि फिलीपीन्स से अन्य निर्यातकों में से किसी ने भी निर्यातक प्रश्नावली का जवाब नहीं दिया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावे पर भी अन्य हितबद्ध पक्षकार/पक्षकारों द्वारा विवाद नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों के तहत सामान्य मूल्य का निर्धारण नियमावली 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसलिए स्रोत मूल देश में अनुमानित उत्पादन लागत के संबंध में उपलब्ध सूचना तथा उचित समायोजनों के पश्चात् बिक्री, प्रशासनिक तथा सामान्य खर्च को संबद्ध वस्तुओं का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए आधार के रूप में लिया गया है। कमीशन, समुद्री भाड़े, इत्यादि के लिए लागू समायोजनों को पूरा करने के पश्चात् जांच अवधि के दौरान अधिमानी औसत निर्यात

कीमत को गणना में लेते हुए कारखाना निकासी निर्यात कीमत परिकलित की गई है तथा उसके पश्चात् गैर सहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन साबित किया गया है।

### 5. मै0 किंगबोर्ड लेमिनेट्स, हांग कांग

इस निर्यातक ने प्रश्नावली के परिशिष्ट I के अनुसार घरेलू बिक्रियों से संबंधित सौदेवार जानकारी प्रस्तुत नहीं की है जिसके बिना प्राधिकारी द्वारा सामान्य व्यापार प्रक्रिया का परीक्षण नहीं किया जा सका। प्राधिकारी नोट करते हैं कि निर्यातक ने सूचना निर्यातक की प्रश्नावली के अंतर्गत अपेक्षित प्रपत्र और निर्धारित ढंग से प्रस्तुत नहीं की है। चूंकि परिशिष्ट 8 के तहत कोई सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है और निर्यातक द्वारा कोई कारोबार वार सूचना प्रस्तुत नहीं की गई है इसलिए प्राधिकारी यह निर्धारित नहीं कर सकते कि क्या बिक्री व्यापार की सामान्य प्रक्रिया में हुई है। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावों पर भी निर्यातक द्वारा कोई विवाद नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के तहत नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए मूल देश में उत्पादन की अनुमानित लागतों और साथ ही बिक्री, प्रशासनिक और सामान्य व्यय तथा उचित समायोजन करने के पश्चात् लाभ की उचित राशि के बारे में उपलब्ध सूचना को आधार बनाया गया है। कारखाना द्वार स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण हांगकांग से भारत को भारत औसत निर्यात कीमत उपयुक्त समायोजन करके किया जाता है और इसके पश्चात् पाटन मार्जिन निर्धारित किया जाता है।

### 6. हांग कांग के अन्य निर्यातक

प्राधिकारी नोट करते हैं कि हांगकांग के अन्य किसी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावों पर अन्य हितबद्ध पक्षकार/पक्षकारों द्वारा कोई विवाद नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के तहत नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए मूल देश में उत्पादन की अनुमानित लागतों और साथ ही बिक्री, प्रशासनिक और सामान्य व्यय तथा उचित समायोजन करने के पश्चात् लाभ की उचित राशि के बारे में उपलब्ध सूचना को आधार बनाया गया है। कारखाना-गत निर्यात कीमत जांच अवधि के दौरान प्रकार/ग्रेड के लिए भारत औसत निर्यात कीमत को ध्यान में रखने और कमीशन, समुद्री भाड़ा इत्यादि के लिए उपयुक्त समायोजन करने के पश्चात् किया गया है और इसके बाद असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन का निर्धारण किया गया है।

## 7. ताइवान के निर्यातक

प्राधिकारी नोट करता है कि कि ताइवान के किसी भी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावली के के संबंध में अपेक्षित रूप तथा तरीके से प्रत्युत्तर नहीं दिया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावों पर अन्य हितबद्ध पक्षकार/पक्षकारों द्वारा कोई विवाद नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के तहत नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकल्पित करने के लिए मूल देश में उत्पादन की अनुमानित लागतों और साथ ही बिक्री, प्रशासनिक और सामान्य व्यय तथा उचित समायोजन करने के पश्चात् लाभ की उचित राशि के बारे में उपलब्ध सूचना को आधार बनाया गया है। इसलिए प्राधिकारी ने ताइवान के अन्य निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमावली के नियम 6(8) की शर्तों में सर्वोत्तम उपलब्ध जानकारी के अनुसार किया है। कारखानागत निर्यात कीमत का निर्णय कमीशन, समुद्री भाड़े के लिए उपयुक्त समायोजन करने के पश्चात् किया गया है और तत्पश्चात् असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन तय किया गया है।

## 8. मै0 शंघाई नान्या, चीन जन.गण

प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के ज्ञात निर्यातकों को इस बात का अवसर प्रदान किया कि वे धारा 9क (i)(ग) के अनुसार जांच के संगत जानकारी प्रस्तुत करें और अपनी टिप्पणी, यदि कोई हो, ऑफर करें। प्राधिकारी ने ज्ञात निर्यातकों और भारत स्थित चीन के दूतावास को यह भी सूचित किया कि उसका प्रस्ताव है कि यथासंशोधित पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के अनुच्छेद 7 तथा 8 के अनुसार याचिकाकर्ता की जांच होगी। चीन जन.गण. के एकमात्र निर्यातक अर्थात् मै0 शंघाई नान्या, चीन जन.गण. ने प्रश्नावली का पूरा प्रत्युत्तर प्राधिकारी को प्रस्तुत किया है। चीन के निर्यातक मै0 शंघाई नान्या जिसने प्राधिकारी की निर्यातक प्रश्नावली का प्रत्युत्तर दिया है, ने प्राधिकारी द्वारा पूछे गए निश्चित प्रश्नों के प्रत्युत्तर में किए गए निवेदन के आधार पर बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा दिए जाने का अनुरोध किया है जिससे कि सहयोगकर्ता निर्यातक पाटनरोधी नियमावली (बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा देना) के अनुबंध I के अनुच्छेद 8(3) से संबंधित परिकल्पना का खंडन कर सके। इस दावे के गुणावगुणों की जांच करने में प्राधिकारी ने चाहा कि इस बात की पड़ताल की जाए कि क्या जांच कार्रवाई में सहयोग करने वाले उत्पादक/निर्यातक को इसकी तुलना में कि सरकार से उसे कानूनी तथा वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त हुई हो जो बाजार अर्थव्यवस्था के देश में विद्यमान हो और जिससे प्राधिकारी पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के अनुच्छेद 1-6 के अनुसार सामान्य मूल्य

के निर्धारण की कार्रवाई न्यायोचित ठहरा सके । उसके फलस्वरूप वह पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के अनुच्छेद 7 तथा 8 के अनुसार खंडन स्वीकार करने में स्वयं को साबित कर सके । इसके लिए स्वामित्व, प्रबंध नियंत्रण वाणिज्यिक तथा व्यापार नीति के निर्धारण के संबंध में विस्तृत प्रश्न भी निर्यातक/उत्पादक को भेजे गए । मै0 शंघाई नान्या के पूर्ण अपवाद के साथ किसी भी उत्पादक ने प्राधिकारी को प्रत्युत्तर नहीं दिया है कि उनके कार्यचालन पूर्ण रूप से चीन के प्राधिकारियों से स्वतंत्र हैं जिससे कि वह बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा प्राप्त कर सकें ।

मै0 शंघाई नान्या चीन जन.गण. में स्थापित एक कानूनी हस्ती है जिसमें राज्य/सरकार का कोई इक्विटी हिस्सा नहीं है । प्राधिकारी ने इस कंपनी के परिसर में मौके पर पड़ताल की है जिससे उन परिस्थितियों की जांच हो सके जिनमें वह कार्यचालन करता है और उसके सरकार के साथ कोई संबंध हों । विशेष रूप में कंपनी प्राधिकारी को संतोषजनक ढंग से यह दर्शा सकी है कि फैक्टरी का प्रबंध तथा नियंत्रण दोनों ही उत्पादन, विपणन तथा कीमत निर्धारण स्पष्ट रूप से उनके हाथों में है और उनका कार्यचालन पर्याप्त रूप से सरकार से मुक्त है ।

उपरोक्त को देखते हुए, यह विचार करना संभव हो सका कि सहयोगकर्ता निर्यातक को बाजार अर्थव्यवस्था व्यवहार का दर्जा दिया जाए और उसके परिणामस्वरूप पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के अनुच्छेद 1-6 द्वारा सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की कार्रवाई की जाए ।

केवल सहयोगकर्ता निर्यातक/उत्पादक मै0 शंघाई नान्या के संबंध में सामान्य मूल्य साबित करने के प्रयोजन से पहले इस बात का निर्धारण किया गया कि क्या उत्पादक द्वारा संबद्ध माल की कुल घरेलू बिक्रियां तब प्रतिनिधि रूप में हैं जब उसकी तुलना निर्यातक देश में बेचे गए संबंधित संबद्ध माल की उनकी कुल बिक्री से की गई और क्या उनकी बिक्रियां पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध I के नियम 2 के अनुसार सामान्य व्यापार प्रक्रिया के तहत की गई । प्राधिकारी नोट करता है कि सहयोगकर्ता निर्यातक की घरेलू बिक्रियां प्रतिनिधि बिक्री रही । इस बात का पता लगाने के लिए कि क्या यह सामान्य व्यापार प्रक्रिया के तहत हुई है, प्राधिकारी ने संबद्ध माल की उत्पादन लागत का विश्लेषण किया है और उसकी तुलना संबद्ध माल की घरेलू बिक्री कीमतों के संबंध में सहयोगकर्ता निर्यातक द्वारा प्रस्तुत सौदेवार जानकारी से की गई । प्राधिकारी ने सहयोगकर्ता निर्यातक द्वारा अपने लेखा पुस्तकों में रखे गए रिकॉर्ड के अनुसार संबद्ध माल की उत्पादन लागत की भी पड़ताल की और खोज निकाला कि घरेलू बिक्रियां पाटनरोधी नियमावली के अर्थ के भीतर सामान्य व्यापार प्रक्रिया के तहत हुई । प्राधिकारी ने सहयोगकर्ता निर्यातक के संबंध में सामान्य मूल्य \*\*\*\* अमरीकी डालर कारखानागत स्तर पर निर्धारित की इसमें

सभी समायोजन शामिल हैं जिनकी प्राधिकारी ने विधिवत् पड़ताल की थी। कारखानागत स्तर पर निर्यात कीमत का निर्धारण भी सभी समायोजन करने के पश्चात् किया गया।

#### 9. चीन जन.गण. के अन्य निर्यातक

प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जन.गण. के अन्य किसी निर्यातक ने निर्यातक प्रश्नावलीका उत्तर नहीं दिया है। सामान्य मूल्य के निर्धारण के संबंध में याचिकाकर्ता द्वारा किए गए दावों पर अन्य हितबद्ध पक्षकार/पक्षकारों द्वारा कोई विवाद नहीं किया गया है। इन परिस्थितियों में सामान्य मूल्य नियमों के तहत नियम 6(8) के अनुसार उपलब्ध तथ्यों के आधार पर निर्धारित किया गया है। इस प्रकार संबद्ध वस्तु का सामान्य मूल्य परिकलित करने के लिए मूल देश में उत्पादन की अनुमानित लागतों और साथ ही बिक्री, प्रशासनिक और सामान्य व्यय तथा उचित समायोजन करने के पश्चात् लाभ की उचित राशि के बारे में उपलब्ध सूचनाको आधार बनाया गया है। इसलिए प्राधिकारी ने चीन जन.गण. के अन्य निर्यातकों के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण पाटनरोधी नियमों के नियम 6(8) की शर्तों में उपलब्ध उचित सूचना के अनुसार किया है। कारखानागत निर्यात कीमत, कमीशन, समुद्री भाड़े के लिए उपयुक्त समायोजन करने के पश्चात् निकाली गई है और तत्पश्चात् असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन तय किया गया है।

देश	निर्यातक/आयात का नाम	पाटन मार्जिन %
कोरिया जनवादी गणराज्य	मै0 दूसान कार्पो.	21.28
	अन्य निर्यातक	56.46
हांगकांग	सभी निर्यातक	40
ताइवान	सभी निर्यातक	40.67
फिलीपींस	मै0 आइसोला	6.2
	अन्य निर्यातक	39.47
चीन जनवादी गणराज्य	मै0 शंघाई नन्या	शून्य
	अन्य निर्यातक	57.17

#### ज. क्षति

10. भारत में घरेलू उद्योग पर आयातों के प्रभाव की जांच करने के लिए प्राधिकारी ने उक्त नियमावली के अनुबंध II(iv) के अनुसरण में ऐसे संकेतकों पर विचार किया है



जो उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालते हैं जैसे उत्पादन, क्षमता का उपयोग, बिक्री की मात्रा, भंडार, लाभप्रदता, निवल बिक्री प्राप्ति, पाटन की मात्रा और मार्जिन इत्यादि।

1. समान वस्तु के घरेलू उत्पादन के संबंधमें नियमों के अनुबंध II के पैरा 6 के अनुसरण में पाटित आयातों के प्रभावका मूल्यांकन तब किया जा सकता है, जब उपलब्ध आंकड़े उत्पादन प्रक्रिया, उत्पादक की बिक्री और लाभ जैसे मानदण्डों के आधार पर उस उत्पादन की अलग से पहचान की अनुमति दें। यदि उस उत्पादन की ऐसी अलग से पहचान संभव न हो तब पाटित आयातों के प्रभाव का मूल्यांकन सबसे छोटे समूह अथवा उत्पादों की श्रेणी के उत्पादन की जांच द्वारा किया जा सकता है जिसमें वह समान उत्पाद शामिल हैं जिसके लिए आवश्यक सूचना उपलब्ध कराई जा सकती है।
2. यह देखा जा सकता है कि यद्यपि विभिन्न प्रकार के कॉपर क्लैड लैमिनेट्स की विभिन्न विशेषताएं, उपयोग इत्यादि होते हैं तथापि, कुछेक प्रक्रियाएं ऐसी हैं जिनमें आम उपकरणों और सुविधाओं का उपयोग किया जाता है। इस तथ्य के मद्देनजर कि उत्पादन प्रक्रिया और उत्पादन क्षमताएं अलग-अलग अनुपातों में परस्पर एक ही होती हैं इसलिए लैमिनेट के प्रत्येक अलग-अलग किस्म के लिए घरेलू उद्योग की क्षति का मूल्यांकन करना न तो उपयुक्त होगा और न ही संभव होगा। इसलिए प्राधिकारी पाटनरोधी नियमों के अनुबंध 2 के पैरा 6 के अनुसरण में कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के सभी विभिन्न प्रकारों के लिए क्षति का संचयी मूल्यांकन उपयुक्त समझते हैं।

### प्राधिकारी द्वारा जांच

19. घरेलू उद्योग को हुई क्षति का विश्लेषण रिकार्ड में उपलब्ध सूचना और पाटनरोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय के अधिकारियों द्वारा किए गए सत्यापन के आधार पर किया गया है। क्षति निर्धारण और क्षति विश्लेषण जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों के आधार पर किया गया है। जांच अवधि और पूर्ववर्ती वर्षों के दौरान आयातों की कुल मात्रा का निर्धारण करने के लिए प्राधिकारी ने संबद्ध वस्तु के आयात आंकड़े संबद्ध देशों और संबद्ध देशों से अलग देशों से गौण स्रोतों से लिए हैं क्योंकि डी जी सी आई एंड एस से वर्ग मीटर के रूप में इकाईयों के लिए कारोबारवार कोई आंकड़े उपलब्ध नहीं कराए गए हैं। इसके अलावा, कई निर्यातकों ने अपने सभी सौदों में इकाईयों को एस क्यू एम निर्यात इकाई के रूप में उल्लिखित किया है। कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री और कीमत हास तथा कीमत अवमूल्यन का निर्धारण करने के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने विभिन्न प्रकार के सी सी एल (ग्लास आधारित, फाइबर आधारित और कम्पोजिट) की तुलना की है, जिनका आयात संबद्ध देशों से किया गया है और जिनका विनिर्माण और बिक्री घरेलू उद्योग द्वारा की जा रही है।

## मात्रा संबंधी क्षति

संबद्ध देशों से हुए आयातों में बहुत अधिक वृद्धि और कुल आयातों में उनका बाजार हिस्सा

1. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के आयातों में संपूर्ण रूप से पर्याप्त वृद्धि हुई है। इसके अलावा, यह भी नोट किया जा सकता है कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों का हिस्सा भारत में उत्पादों के कुल आयातों के संबंध में पर्याप्त रूप से बढ़ा है। प्राधिकारी अनंतिम रूप से साक्ष्य की जांच करने के पश्चात् इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि इस फर्म को संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के बढ़े हुए आयातों के कारण क्षति हो रही है।

संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात- एसक्यूएम इकाईयां				
	99-00	2000-01	अप्रैल-दिस. वार्षिक	जांच अवधि वार्षिक
संबद्ध देश	984241	992044	1279763	1587843
अन्य देश	65912	33467	15458	25630
कुल आयात	105153	1025511	1295221	1613473

मांग के अनुपात में संबद्ध देशों से आयातों का हिस्सा

2. प्राधिकारी ने देश में कुल मांग की गणना कुल आयातों को विचाराधीन उत्पाद की घरेलू उद्योग की बिक्री से जोड़कर की है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन जनवादी गणराज्य, हांगकांग, ताइवान, दक्षिण कोरिया और फिलीपींस का हिस्सा संबद्ध वस्तु की कुल मांग में संबद्ध देशों का हिस्सा जांच अवधि के दौरान अधिक हुआ है जबकि अन्य आयातों के हिस्से में मामूली वृद्धि हुई है। इस प्रकार प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि कुल मांग के हिस्से के रूप में संबद्ध देशों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है और यह पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में जांच अवधि के दौरान काफी बढ़ गया है।

संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयात - एसक्यूएम इकाईयां				
	99-00	2000-01	अप्रैल-दिस. वार्षिक	जांच अवधि वार्षिक

संबद्ध देश	100	100.7	130.03	161.3
अन्य देश	100	50.78	23.45	38.89
कुल आयात	100	97.65	123.34	153.64

कुल आयात में संबद्ध देशों का अंश (%)				
	99-00	2000-01	अप्रैल-दिस. वार्षिक	जांच अवधि वार्षिक
संबद्ध देश	93.72	96.74	98.81	98.41
अन्य देश	6.28	3.26	1.19	1.59
कुल आयात	100	100	100	100

### घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में आयात-हिस्से में वृद्धि

3. घरेलू उद्योग के उत्पादन के संबंध में संबद्ध देशों से संबद्ध माल के आयात हिस्से में वृद्धि हुई है हालांकि पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में सुधार हुआ है । प्राधिकारी यह निष्कर्ष देता है कि घरेलू उद्योग को बाजार हिस्से में पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान गिरावट नहीं आई है हालांकि कुल मांग में उसका हिस्सा निराशाजनक रहा है ।

कुल मांग में घरेलू उद्योग का हिस्सा				
	99-00	2000-01	अप्रैल-दिस. वार्षिक	जांच अवधि वार्षिक
संबद्ध देश	55.8	56.64	67.2	86.11
अन्य देश	3.74	1.91	0.81	1.39
घरेलू उद्योग	13.35	17.29	9.77	11.96
अन्य उत्पादक	27.12	24.16	22.22	.54
योग	100	100	100	100

### उत्पादन एवं क्षमता उपयोग

4. पिछले नौ महीनों की तुलना में जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन एवं क्षमता उपयोग में वृद्धि हुई है। अतः प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि घरेलू उद्योग को क्षमता उपयोग में हानि के कारण कोई क्षति नहीं हुई है यद्यपि क्षमता उपयोग संयुक्त माल की कुल मांग की तुलना में बहुत ही निराशाजनक रहा है। घरेलू उद्योग की घरेलू बिक्रियों में पिछली अवधि की तुलना में जांच अवधि के दौरान वृद्धि हुई है यद्यपि 99-00 से उसमें मामूली गिरावट आई है। प्राधिकारी यह नोट करता है कि क्षमता उपयोग तथा घरेलू बिक्रियों दोनों की वजह से घरेलू उद्योग को पिछले वर्ष की तुलना में जांच अवधि में कोई क्षति नहीं हुई है यद्यपि घरेलू उद्योग में क्षमता उपयोग तथा घरेलू बिक्रियों में प्रारंभिक वर्षों से ही कम रहा है।

### कीमत-प्रभाव

5. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है पाटनरोधी नियमों के अनुबंध 2 के सिद्धांत (4) में निम्नानुसार उल्लेख है:

संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करते समय उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी आवश्यक आर्थिक कारकों तथा संकेतकों का मूल्यांकन शामिल होना चाहिए, जिनमें बिक्रियों, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश से आय या क्षमता का उपयोग में प्राकृतिक एवं संभावित कमी, घरेलू कीमतों पर प्रभाव डालने वाले कारक, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह, सूचियों, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता में वास्तविक एवं संभावित नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय, इस बात की जांच करना आवश्यक समझा जाता है कि क्या भारत में समान उत्पाद के मूल्य की तुलना में पाटित आयातों द्वारा मूल्यों में पर्याप्त मात्रा में कटौती हुई अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्वया पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान संबंध देशों से संबंधित वस्तु के आयातों के पहुंच मूल्य की तुलना निवल बिक्री प्राप्तियों से की है और यह पाया है कि पाटित आयातों द्वारा कीमतों में भारी कटौती की गई है। आयातों के पहुंच मूल्य को घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्तियों से काफी कम पाया गया है।

प्राधिकारी ने याचिकाकर्ता के इस दावे की भी जांच की है कि घरेलू उद्योग कॉपर क्लैड लैमिनेट्स की बिक्री पर हुए घाटे के कारण प्रभावित हो रहा है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि क्षति का मूल्यांकन करने के लिए कम कीमत पर बिक्री एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

प्राधिकारी ने विचाराधीन उत्पाद की क्षतिरहित कीमत निकाली है और कम कीमत पर बिक्री की सीमा पर पहुंचने के लिए इसकी तुलना पहुंच मूल्य से की है। यह विश्लेषण कम कीमत पर बिक्री के प्रभाव के महत्वपूर्ण स्तर को दर्शाता है जिसके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है। इसके अतिरिक्त, इन आयातों का घरेलू बाजार में कीमतों पर अत्याधिक ह्रासकारी/न्यूनकारी प्रभाव पड़ रहा था, क्योंकि घरेलू उद्योग पाटित आयातों के मद्देनजर अपनी बिक्री कीमतें नहीं बढ़ा पा रहा था। इस प्रकार, उपलब्ध साक्ष्य की जांच से यह पता चलता है कि जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग को अपनी बिक्रियों पर समग्र रूप से क्षति हुई है। प्राधिकारी ने जांच अवधि के दौरान कीमत कटौती की सीमा निर्धारित की है और यह निष्कर्ष निकाला है कि संबद्ध देश से आयात के कारण जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग ने कीमत में भारी कटौती और कम कीमत पर बिक्री की है।

### बिक्री कीमत

6. जांच अवधि के दौरान वर्ष 2000-01 की तुलना में घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में गिरावट आई है। किंतु प्राधिकारी यह भी नोट करता है कि उनकी उत्पादन लागत लगभग उसी अनुपात में गिर गई है। यह भी नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग विगत कई वर्षों से लगातार नुकसान उठाता रहा है यद्यपि उन्होंने अपने नुकसान जांच अवधि में पिछले वर्ष की तुलना में कम कर दिए हैं। प्राधिकारी इस साक्ष्य की जांच करने के पश्चात् निष्कर्ष देता है कि यह फर्म पिछले वर्षों में लगातार नुकसान के कारण क्षति का सामना करती रही है यद्यपि जांच अवधि के दौरान हानि पिछले वर्षों की तुलना में कम हुई है लेकिन 99-00 की तुलना में अपेक्षतया अधिक रही है।

### माल सूची

7. घरेलू उद्योग की माल सूची स्थिति में जांच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में कोई प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई नहीं देता है यद्यपि बिक्रियों में जांच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि रही है। किंतु यह उनके उत्पादन और वर्ष 99-00 की तुलना में अधिक रही है। प्राधिकारी इस साक्ष्य की जांच करने के पश्चात् निष्कर्ष देता है कि इस फर्म को जांच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में संबद्ध माल की अपेक्षतया अधिक माल सूची के कारण कोई क्षति नहीं हुई है यद्यपि माल सूची वर्ष 99-00 की तुलना में अधिक है।

### उत्पादकता एवं वृद्धि

8. घरेलू उद्योग की उत्पादकता (प्रति कर्मचारी उत्पादन) में पिछले नौ महीनों की तुलना में मामूली सुधार हुआ है। यह भी नोट किया जाता है कि इस कंपनी की वृद्धि में जांच अवधि के दौरान पिछले वर्षों की तुलना में नकारात्मक रुख रहा है। प्राधिकारी इस साक्ष्य की जांच करने के पश्चात् यह निष्कर्ष देता है कि इस फर्म को नकारात्मक वृद्धि के कारण क्षति हो रही है।

### उत्पादकों की संख्या का बंद होना

9. यह नोट किया जाता है कि भारत में संबद्ध माल के अन्य उत्पादकों ने अपना उत्पादन बंद कर दिया है तथा घरेलू उद्योग के रूप में केवल याचिकाकर्ता ही एकमात्र कंपनी रह गया है। सार्वजनिक सुनवाई के पश्चात् अन्य घरेलू उत्पादकों नामतः मै0 पीसीएस इंडस्ट्रीज और मै0 बेकलाइट हाइलैम ने यह अभ्यावेदन किया है कि उन्होंने संबद्ध देशों से होने वाले पाटन की वजह से अपने प्रचालन बंद कर दिए हैं। किंतु सार्वजनिक सुनवाई के बाद उन्होंने कोई दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किया है अथवा अपनी यह बात पुष्ट नहीं की है जिससे यह साबित होता हो कि उन्होंने अपने प्रचालन संबद्ध देशों से पाटन की वजह से बंद कर दिए हैं। इसके विपरीत विभिन्न इच्छुक पक्षकारों ने प्राधिकारी के समक्ष यह रिकार्ड प्रस्तुत किया है कि जिससे यह साबित होता है कि घरेलू उद्योग के सामने प्रयोक्ताउद्योगों को सतत् पूर्ति के रूप में गंभीर क्वालिटी मुद्दे हैं। किंतु, प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध किए गए साक्ष्य के आधार पर यह निष्कर्षतः साबित नहीं हो सकता है कि अनेक उत्पादकों का बंद होने का कारण संबद्ध देशों से संबद्ध माल का पाटन रहा हो।

### नए निवेश जुटाने की सामर्थ्य

10. यह नोट किया जाता है कि याचिकाकर्ता ने पूर्व में वित्तीय संस्थानों से कुछ कर्ज़ लिया था। याचिकाकर्ता ने दावा किया है विद्यमान प्रतिकूल निष्पादन तथा उच्च ब्याज भार के कारण आहरित निधि का उपयोग नहीं किया जा सका। यह भी दावा किया गया है कि यदि नए निवेशों को छोड़ भी दिया जाए तो भी पाटन का प्रभाव इतना गंभीर रहा है कि विद्यमान देयताओं को चुकाना भी कठिन हो गया है। प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्क की जांच की तथा नोट किया कि वर्तमान परिस्थितियों को ध्यानमें रखते हुए फर्म के पास निवेश जुटाने की बहुत कम क्षमता है।

रोजगार

11. यह नोट किया जाता है कि वर्ष 2000-01 की तुलना में जांच अवधि के दौरान कंपनी के रोजगार में मामूली कमी आई है, हालांकि वर्ष 1999-2000 में इसमें वृद्धि हुई है। तथापि, उपलब्ध कराए गए साक्ष्य के आधार पर, प्राधिकारी निष्कर्ष रूप से यह निर्धारित नहीं कर पाया कि रोजगार की कमी के कारण क्षति हुई है।

नकदी प्रवाह तथा लाभप्रदता

12. कंपनी का नकदी प्रवाह जो वर्ष 2000-01 के दौरान सकारात्मक रहा था उसमें तत्पश्चात् लगातार कमी आती रही है और उसके बाद वह ऋणात्मक हो गया है। अनंतिम रूप से साक्ष्य की जांच करने के पश्चात् प्राधिकारी ने यह निष्कर्ष निकाला है कि घटते हुए नकदी प्रवाह के कारण फर्म को क्षति का सामना करना पड़ रहा है।

कीमत हास/कमी तथा कम कीमत पर बिक्री

13. यह नोट किया जाता है कि आयातों का पहुंच मूल्य घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत की तुलना में कम है।

क्षति से संबंधित आर्थिक मानदंड					
	एकक	99-00	2000-01	अप्रैल-दिस. वार्षिक	जांच अवधि वार्षिक
स्थापित क्षमता	सूचकांक	100	100	100	100
उत्पादन	सूचकांक	100	140	91	100
क्षमता उपयोगिता	% सूचकांक	100	140	91	100
घरेलू बिक्री	सूचकांक	100	129	79	94
अन्य उत्पादकों की बिक्री	सूचकांक	100	88	24	8
आरंभिक स्टॉक	सूचकांक	100	58	148	160
अंतिम स्टॉक	सूचकांक	100	253	273	213
उत्पादन लागत	सूचकांक	100	105.4	104.99	87.71
औसत बिक्री मूल्य	सूचकांक	100	117	108	92
लाभ/हानि	सूचकांक	-100	-32	-87	-58

कार्यशील पूंजी	सूचकांक	100	110	102	90
लगाई गई पूंजी	सूचकांक	100	103	101	98.9
पूंजी पर आय	सूचकांक	-100	-22	-78	-50
वेतन व मजदूरी	सूचकांक	100	152	161	158
उत्पादकता	सूचकांक	100	113	77	85
वृद्धि	%	100	15	-20	-31

इसके अतिरिक्त, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत से कम है, जिसके कारण घरेलू उद्योग द्वारा कम कीमत पर बिक्री की गई है। अनंतिम रूप से साक्ष्य की जांच करने के पश्चात प्राधिकारी नोट करते हैं कि कीमतों में हास, कीमत में कमी तथा कम कीमत पर बिक्री के कारण फर्म को क्षति का सामना करना पड़ रहा है।

कॉपर क्लैड लैमिनेट्स में कीमत कटौती (रुपए में) पी एस क्यू एम

जांच अवधि के दौरान कीमत में कटौतियां				
देश	निवल बिक्री मूल्य संबंधित याचिकाकर्ता	संबद्ध देश से पहुंच मूल्य	कीमतों में कटौतियां	भारित औसत कीमतों में कटौतियों का प्रतिशत
चीन जन. गण.	****	****	****	22%
हांगकांग	****	****	****	
ताइवान	****	****	****	
दूसान कोरिया	****	****	****	
अन्य कोरियाई	****	****	****	
आईसोला फिलीपींस	****	****	****	
अन्य फिलीपींस	****	****	****	

### क्षति संबंधी निष्कर्ष

20. उपर्युक्त के आधार पर प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग को हुई क्षति के संबंध में निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले हैं:-



1. संबद्ध देशों से संबद्ध माल के आयात में संपूर्ण रूप में और भारत में कॉपर क्लैड लेमिनेट के कुल आयात के संबंध में काफी वृद्धि हुई है । भारत में कॉपर क्लैड लेमिनेट की मांग के संबंध में संबद्ध देशों से आयात में भी वृद्धि हुई है ।
2. घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में जांच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में सुधार हुआ है । उनकी क्षमता उपयोग में भी जांच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में सुधार हुआ है । यद्यपि यह क्षमता उपयोग बिल्कुल ही निराशाजनक रहा है । घरेलू बिक्रियों में भी जांच अवधि के दौरान पिछले वर्ष की तुलना में वृद्धि हुई है और उनके उत्पादन में भी मामूली सुधार हुआ है ।
3. आयातों के कारण घरेलू उद्योग की बिक्री कीमतों में कटौती हो रही है । याचिकाकर्ता कीमत गिरावट का भी सामना कर रहा है क्योंकि संबद्ध माल की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उचित बिक्री कीमत अथवा अक्षतिकारी कीमत से कम है । याचिकाकर्ता कीमत दबाव/गिरावट का सामना कर रहा है क्योंकि संबद्ध देशों से संबद्ध माल की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की उत्पादन लागत से भी कम है ।
4. घरेलू उद्योग संबद्ध माल की बिक्रियों के कारण नुकसान उठा रहा है । किंतु इस बात की भी पुष्टि की जाती है कि उसे पिछले कई वर्षों से नुकसान उठाता रहा है ।
5. पूर्वोक्त के आधार पर प्राधिकारी को ऐसा प्रतीत होता है कि घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति हुई है ।

#### झ. कारणात्मक संबंध - इच्छुक पक्षों की प्रस्तुति

21. अनेक इच्छुक पक्षकारों द्वारा जोरदार तरीके से यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग को क्षति, यदि कोई हो, का कारण पाटित आयात नहीं हो सकता है । यह मान लिया गया है कि कारणात्मक संबंध के अभाव में कोई भी पाटनरोधी शुल्क नहीं लगाया जा सकता है चाहे निर्दिष्ट प्राधिकारी घरेलू उद्योग को पाटन तथा क्षति की मौजूदगी के निष्कर्ष पर पहुंच गए हों । उनकी बात के समर्थन में इच्छुक पक्षकारों ने मुख्य रूप से निम्नलिखित तर्क दिए हैं:-

क. जहां यह निवेदन किया गया है कि बी आई एफ आर के तहत घरेलू उद्योग को कानूनी तौर पर संरक्षण देना अनुमेय है वहां निर्दिष्ट प्राधिकारी पर यह भी दायित्व

है कि वह शिकायतकर्ता को हुई क्षति के कारणों की जांच करें बेशक वह यूनिट बीआईएफआर के तहत एक रूग्ण कंपनी के रूप में रहा हो ।

- ख. घरेलू उद्योग अपने बाजार हिस्से में वृद्धि कर सका है जबकि संबद्ध देशों से निर्यात बढ़ गए थे । इससे स्पष्ट रूप से यह साबित होता है कि माल के तथाकथित पाटन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच में कोई कारणात्मक संबंध नहीं हैं ।
- ग. बीआईएफआर के तहत योजना के कार्यान्वयन संबंधी प्रगति रिपोर्ट से इंगित होता है कि तथाकथित क्षति का वास्तविक कारण आयात शुल्कों में तीव्र गिरावट का होना है। जहां इस बात का उल्लेख किया गया है कि याचिकाकर्ता ने निर्दिष्ट प्राधिकारी से पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने का अनुरोध किया है, यह निवेदन है कि यह अनुरोध कानून का उल्लंघन है क्योंकि सीमा शुल्कों में गिरावट के कारण होने वाली क्षति का निवारण पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने से नहीं हो सकता है । यह बात सुपरिचित है कि सीमा शुल्कों का प्रयोजन पाटनरोधी शुल्कों से बिल्कुल ही भिन्न है और पाटनरोधी शुल्क का सहारा ऐसे में नहीं लिया जा सकता है जबकि सरकार स्वयं अपनी इच्छा से और प्रभुसत्ता शक्तियों के प्रयोग से घरेलू उद्योग को संरक्षण के सामान्य स्तर से कम स्तर पर नहीं लगा सकती है ।
- घ. उपर्युक्त रिपोर्ट के अनुबंध-IV में स्पष्ट रूप से यह स्वीकारा गया है कि इस योजना के कार्यान्वयन की प्रक्रिया में विलंब से 671 लाख रु० तक का अतिरिक्त नुकसान हुआ है ।
- ङ. अक्टूबर, 1998 से मार्च, 2002 तक की अवधि के दौरान कारोबार में 4088 लाख रु० की गिरावट और उससे होने वाली परिणामी हानियों को तथाकथित पाटन के अलावा कारकों के कारण हुई है । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने इन महत्वपूर्ण कारकों का विवेचन नहीं किया है (रिपोर्ट का अनुबंध IV देखें)।
- च. जीपीईएल अपने आरंभ से ही एक रूग्ण यूनिट रहा है: जीपीईएल 1993 में अपने उद्भव से ही घटिया निष्पादन करता रहा है। वास्तव में यह यूनिट 1995 में बंद हो गया था और उसने तब 1996 में बीआईएफआर से अनुरोध किया । बीआई एफ आर ने अपने स्वीकृत योजना आदेश में जीपीएल के घटिया निष्पादन के बारे में विस्तार से कारण बताए हैं । यह निवेदन है कि याचिकाकर्ता ने निर्दिष्ट प्राधिकारी को संगत ब्याँरों की घोषणा नहीं करके प्राधिकारी को भ्रमित किया है । यह निर्णय दिया गया कि गुजरात परस्टोर्प इलैक्ट्रॉनिक्स लि० (जीपीईएल) ने अक्टूबर, 1993 में अपनी स्थापना के समय 28% से भी अधिक लागत समाप्त कर दी थी और इस

यूनिट का कार्य-चालन उसके प्रारंभ से ही असंतोषजनक रहा है। इसके अतिरिक्त बी आई एफ आर द्वारा निम्नलिखित टिप्पणियां की गई हैं:-

- प्रौद्योगिकी अपनाने में समस्याएं
- प्रबंधन अकुशलता
- उच्च ऋण भार
- विलंबित क्वालिटी परीक्षण रिपोर्ट जिसके फलस्वरूप उत्पादन में विलंब
- संयंत्र तथा मशीनरी प्रतिबंधित क्षमता उपयोग में कमियां
- नकद हानि के फलस्वरूप कार्यशील पूंजी बाधाओं को समाप्त करना

छ. उपरोक्त से यह देखा जा सकता है कि तथाकथित क्षति का श्रेय तथाकथित पाटन को नहीं जाता है क्योंकि यह संयंत्र उस समय भी देयनीय वित्तीय स्थिति में था जबकि पाटन का कोई आरोप नहीं था। याचिकाकर्ता का घटिया कार्य-निष्पादन तथाकथित पाटित आयातों का कारण नहीं बन सकता है। इसलिए यह मामला संबंध के अभाव के आधार पर पूर्णतया असफल है।

ज. याचिकाकर्ता की कम क्षमता:

इस प्रकार, याचिकाकर्ता कुल भारतीय जरूरत का 18% भाग भी पूरा करने की स्थिति में नहीं है। यह निवेदन है कि घरेलू उत्पादक की पूर्ति स्थिति को उनके सर्वोत्तम प्राप्त क्षमता के संदर्भ में और इस तथ्य के संदर्भ में देखा जाना चाहिए कि उनके ऊपर वित्तीय कुप्रबंधन और सतत घटिया निष्पादन (बीआईएफआर दस्तावेज देखें) के कारण अपनी क्षमता बढ़ाने में गंभीर बाधाएं हैं।

झ. घटिया तथा अनियमित क्वालिटी: यह सुझाव देने के लिए साक्ष्य प्रस्तुत किया गया है कि सप्लाई किए गए कॉपर क्लैड लेमिनेट की क्वालिटी संतोषजनक नहीं है। अतः इसका प्रयोग ऐसे उत्पाद के विनिर्माण में नहीं किया जा सकता जो अंततः संवेदनशील इलैक्ट्रॉनिक उपकरण में प्रयोग किया जाता है।

ट. प्रौद्योगिकीय तथा अन्य समस्याएं: जीपीईएल की प्रौद्योगिकी क्षमता पर निम्नलिखित आधार पर प्रश्नचिह्न लगाया गया है:

i. प्रशिक्षित मानव शक्ति की अनुपलब्धता क्योंकि लेमिनेट विनिर्माता अधिक संख्या में नहीं हैं।

- ii. प्रक्रिया में प्रयुक्त संयंत्र तथा मशीनरी पूरक हैं। कुछ मशीनरी को स्थानीय रूप से बनाया गया है और इस कारण गंभीर क्वालिटी समस्याएं बनीं (बीआईएफआर मामले में जीपीईएल ने इस तथ्य को स्वीकार किया है)।
- iii. तत्कालीन प्रौद्योगिकीय सहयोगी मैसर्स परस्टोर्प ऐसा कोई नाम नहीं है जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाना जाता हो। वास्तव में परस्टोर्प ने अपना कारोबार चार वर्ष पहले पोलिवलेन को बेच दिया था। अतः जी पी ई एल की किसी प्रौद्योगिकी में कोई पहुंच नहीं है।
- iv. क्वालिटी, उत्पादन तथा वितरण प्रक्रियाओं में ज्ञान आधार बहुत ही घटिया है।
- v. यह एक क्यूएस 9000 स्वीकृत कंपनी नहीं है। अनेक पीसीबी ग्राहक किसी क्यूएस 9000 कंपनी से ही अंतर्निविष्ट साधन खरीदने में मजबूर होते हैं।
- vi. उनका बाजार विश्वास विस्तृत ही घटिया है। कंपनी के पास केवल एक उत्पादन स्थान है और कोई भी व्यक्ति ऐसी कंपनी से खरीद नहीं करना चाहेगा क्योंकि उत्पादन व्यवधान के समय अन्य कोई विकल्प नहीं है।
- vii. जीपीईएल के पास पूर्ववर्ती एकीकरण नहीं है उन्हें आयातित कच्चे माल की कीमतों पर आश्रित रहना पड़ता है।
- viii. उनका सर्वप्रथम उत्पादन 80% रहा है जबकि विदेशी लेमिनेट विनिर्माओं का उत्पादन 95% से अधिक रहा था।

(i) पुरानी प्रौद्योगिकी तथा सच्चीकरण का अभाव: यह कहा गया है कि जीपीईएल ने अपने सहयोगी मैसर्स परस्टोर्प, स्वीडन से प्रौद्योगिकी प्राप्त कर ली है। आगे यह भी कहा जाता है कि परस्टोर्प का नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर नहीं जाना जाता। वास्तव में, परस्टोर्प ने अपना कारोबार लगभग चार वर्ष पहले पोलिवलेन को बेच दिया था और उनका अद्यतन प्रौद्योगिकी के लिए पहुंच और उसके सच्चीकरण का प्रश्न नहीं उठता है।

प्राधिकारी द्वारा कारणात्मक संबंध की जांच

22. प्राधिकारी ने कारणात्मक संबंध के मुद्दे के बारे में विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा किए गए विवेदनों की सार्वजनिकपूर्वक जांच की है। अनंतिम जांच परिणामों के पश्चात प्राधिकारी द्वारा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति तथा घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति एवं बाह्य आयातों के बीच कारणात्मक संबंध से संबंधित मुद्दों के बारे में ब्यौरेवार जांच की गयी थी। प्राधिकारी नियमावली के अनुबंध II का अनुच्छेद(v) इस प्रकार है:-

"(v) यह अवश्य प्रदर्शित किया जाए कि पाटित आयात पाटन के प्रभाव के जरिए हुए हैं जैसाकि उपर्युक्त अनुच्छेद II तथा IV में निर्धारित हैं और जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हुई हो। पाटित आयातों तथा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति के बीच कारणात्मक संबंध दिखाना निर्दिष्ट प्राधिकारी के समक्ष संगत साक्ष्य की जांच के आधार पर होगा। निर्दिष्ट प्राधिकारी भी ज्ञात कारकों की जांच करेगा जिनमें पाटित आयात शामिल नहीं होंगे और जिससे साथ ही घरेलू उद्योग को हानि हुई हो और इन अन्य कारकों के कारण होने वाली क्षति को पाटित आयातों का कारण नहीं दिखाया जाना चाहिए। ऐसे कारक जो इस संबंध में संगत हैं, उनमें अन्य बातों के साथ-साथ शामिल हैं पाटन कीमतों पर नहीं बेचे गए आयातों की मात्रा तथा कीमतें। खपत के पैटर्न में मांग में असंबंध अथवा परिवर्तन व्यापार प्रतिबंधात्मक पद्धतियां तथा विदेशी तथा घरेलू उत्पादकों के बीच प्रतिस्पर्धा, प्रौद्योगिकी में विकास और घरेलू उद्योग का निर्यात निष्पादन तथा उत्पादकता"।

(क) यह निर्धारित करते समय कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति पाटित आयातों के कारण हुई थी, प्राधिकारी ने सभी ज्ञात कारकों के प्रभाव तथा उद्योग की स्थिति पर उनका परिणामों की जांच की। पाटित आयातों के अलावा ज्ञात कारक, जिन्होंने उसी समय घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाई है की भी जांच की गई थी ताकि यह सुनिश्चित किया जा सक कि इन अन्य कारकों के कारण संभावित क्षति पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है। प्राधिकारी यह नोट करते हैं कि विभिन्न पक्षों द्वारा क्षति व कारणात्मक संबंध से संबंधित दिए गए किसी भी तर्क को घरेलू उद्योग द्वारा दिए गए प्रत्युत्तर में संबोधित नहीं किया गया है। वास्तव में, विभिन्न आयातकों व निर्यातकों द्वारा की लिखित प्रस्तुतियों के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया गया है।

#### (ख) पाटित आयातों का प्रभाव

वर्ष 1999-2000 तथा जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से पाटित आयातों का बाजार हिस्सा 1999-00 में 55.8 प्रतिशत से जांच अवधि के दौरान 82.67 प्रतिशत के बीच था। जहां तक निर्यात कीमतों का संबंध है, संपूर्ण विचाराधीन अवधि के दौरान इनमें काफी हद तक कमी आई है तथा जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों में औसतन 22 प्रतिशत की कटौती हुई है। पाटित आयातों की कीमतें जांचाधीन अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की कीमतों से कम थी।

(ग) अन्य कारकों का प्रभाव : संबद्ध माल का उत्पादन करने वाली अन्य दो कंपनियों का बंद होना

कुछ आयातकों ने सलाह दी है कि अन्य घरेलू उत्पाद तथा मैसर्स सैंदूर लैमिनेट्स जो कि 100 प्रतिशत ई ओ यू था तथा मै0 बैकलाइट हाइलेम जिन्होंने 1999 में उत्पादन बंद कर दिया था का संबद्ध देशों से पाटित आयातों के कारण हुई क्षति से कोई संबंध नहीं है। मैसर्स बैकलाइट हाइलेम तथा मैसर्स पी सी एस ने 2001-02 तक का अपना उत्पादन विवरण प्रस्तुत किया है तथा इसकी पुष्टि की है कि अनेक देशों से पाटन के फलस्वरूप उन्होंने अपना कार्य बंद कर दिया है। किंतु सार्वजनिक सुनवाई के बाद मै0 बैकलाइट हाइलेम और मै0 पीसीएस इंडस्ट्रीज दोनों ने ही इस तथ्य के संबंध में कोई भी साक्ष्य/दस्तावेज प्रस्तुत नहीं किया है कि उन्होंने संबद्ध देशों से होने वाले पाटन की वजह से अपने कार्यचालन बंद कर दिए हैं अतः प्राधिकारी उपलब्ध रिकार्ड के आधार पर निष्कर्ष रूप से यह निर्धारण नहीं कर सकता है कि इन दोनों उद्योगों ने संबद्ध देशों से होने वाले पाटन के कारण प्रचालन बंद कर दिए हैं।

(घ)(i) विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह प्रस्तुत किया गया है कि याचिकाकर्ता कंपनी ने विगत अनेक वर्षों से अपने निवल मूल्य को अदक्ष निष्पादन के कारण काफी हद तक कम किया है न कि आरोपित पाटित आयातों के कारण। यह भी प्रस्तुत किया गया कि कंपनी एक पुनर्वास पैकेज के लिए सक्षम प्राधिकारी (बी आई एफ आर) से पहले से ही पंजीकृत है तथा याचिकाकर्ता कंपनी को विगत अनेक वर्षों से हुई लगातार हानि आरोपित पाटित आयातों के कारण नहीं हुई है। प्राधिकारी ने इस विवरण को सही माना है कि कंपनी ने अपना निवल मूल्य, जैसा कि विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दावा किया गया है, रिपोर्ट में दर्ज कारणों की वजह से कम किया है। यह भी नोट किया गया है कि सक्षम प्राधिकारी ने कंपनी के बीमार होने के कुछ कारणों का पता लगाया है तथा आगे यह भी पता लगाया है कि यदि कंपनी इन कमजोरियों को दूर करने के लिए कुछ कदम उठाती है तो कंपनी फिर से सक्षम हो सकती है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि कंपनी काफी लंबे समय से क्षति का सामना कर रही है तथा इस दीर्घकालीन क्षति के अनेक कारण हो सकते हैं। सक्षम प्राधिकारी ने रिपोर्ट में क्षति के कारणों को स्पष्टता से बताया है तथा याचिकाकर्ता द्वारा सक्षम प्राधिकारी के समक्ष दायर की गई रिटर्न की प्रतियों के अनुसार पहले से ही कार्रवाई की गई है, जैसाकि याचिकाकर्ता ने निवेदन किया है। किंतु प्राधिकारी सभी रिकॉर्डों की जांच करने के बाद इस बात पर सहमत होता है कि कतिपय क्षेत्र नामतः प्रौद्योगिकी को आत्मसात करने में समस्याएं, क्वालिटी परीक्षण की विलंब से दी गई रिपोर्टें जिसके फलस्वरूप उत्पादन में विलंब हुआ है, संयंत्र तथा मशीनरी प्रतिबंधित क्षमता उपयोग में कमियां अभी भी कायम हैं। यद्यपि घरेलू उद्योग को पहले हुई क्षति जिनका रिपोर्ट में उल्लेख है और जिसका उल्लेख पहले किया गया है और जो अब भी समयावधि के कारण घरेलू

उद्योग को हो रही है, प्राधिकारी नोट करता है कि घरेलू उद्योग ने क्षमता निर्माण अथवा प्रौद्योगिकी सुधार के संबंध में पर्याप्त कदम नहीं उठाए हैं जैसाकि अन्य शीर्षकों में उल्लेख किया गया है अथवा यह जानकर भी सतत रूप से सप्लाई करता रहा है कि कई परीक्षण परिणामों में से एक भी नकारात्मक परीक्षण की वजह से प्रयोक्ता उद्योग को काफी नुकसान हो सकता है (यह कॉपर क्लैड लेमिनेट की लागत के 50 गुना तक अधिक हो सकता है) ।

प्रारंभिक निष्कर्ष के पश्चात, विभिन्न इच्छुक पक्षकारों द्वारा यह आरोप लगाया गया है कि कंपनी ने अपना प्रचालन बंद कर दिया है और अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बाद भी अब वह किसी संबद्ध माल का कोई उत्पादन नहीं कर रही है। प्राधिकारी ने दिनांक 11 दिसंबर, 2003 को घरेलू उद्योग के रिकार्ड की पड़ताल की है और नोट करता है कि उसने अनंतिम पाटनरोधी शुल्क के बाद अपना प्रचालन बंद कर दिया है और पिछले 6 महीनों में अवकाश के दिनों में काफी वृद्धि हुई है । प्राधिकारी ने एक सत्यापन दौरे में यह नोट किया कि यह कंपनी अब कार्यचालन में नहीं है । उसने यह भी नोट किया कि उसने बीएफआर को यह सूचित कर दिया है कि " भारत में सीसीएल विनिर्माण के मौजूदा परिदृश्य को देखते हुए कंपनी के प्रचालन अर्थक्षम नहीं हैं और इसलिए माननीय बीआईएफआर से अनुरोध किया गया है कि वह इस पर विचार करे और कंपनी बारे में दिए गए निष्कर्ष को अपने रिकार्ड में ले ले क्योंकि कंपनी वर्तमान परिस्थितियों में अर्थक्षम नहीं है और उन्होंने बीआईएफआर से यह भी अनुरोध किया है कि रूग्ण औद्योगिक कंपनी अधिनियम, 1985 के लागू उपबंधों के तहत यथोचित आदेश दे दें । प्रकटन विवरण के उपरांत इच्छुक पक्षों ने प्राधिकारी को घरेलू उद्योग को दिनांक 3 दिसंबर 2003 से बंद करने के नोटिस के बारे में सूचित किया गया ।

(ड.) मांग का संकुचन अथवा खपत के पैटर्न में परिवर्तन:

प्राधिकारी को मांग के संकुचन का कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ । किंतु प्राधिकारी ने संबद्ध माल की तकनीकी विशेषताओं के अनुसार निर्यातकों तथा प्रयोक्ता उद्योग द्वारा किए गए निवेदनों की पड़ताल की जोकि अब संबद्ध माल के प्रयोक्ता उद्योग की मांग में है । प्राधिकारी नोट करता है कि सभी किस्मों/ग्रेडों के उच्च टीजी ( 135 से अधिक टी जी ), सीटीआई 400 तथा अधिक के एफआर 4, एफआर 1 और एफआर 2 जिसमें 600 से अधिक सीटीआई हो, ग्रीन लेमिनेट (हैलोजन मुक्त) वाले संबद्ध माल की बढ़ती हुई मांग और खपत है । घरेलू उद्योग के पास मौजूद पत्राचार को प्रयोक्ता उद्योग ने प्राधिकारी के समक्ष प्रस्तुत किया जिससे इंगित होता है कि घरेलू उद्योग उपरोक्त तकनीकी विनिर्देशों वाले संबद्ध माल की सप्लाई करने की स्थिति में नहीं है । उपरोक्त के आधार पर प्राधिकारी नोट करता है कि खपत के पैटर्न में परिवर्तन हुआ है और घरेलू उद्योग खपत के बदले हुए पैटर्न के अनुसार संबद्ध माल का प्रौद्योगिकी उच्चीकरण नहीं कर सका है । इस प्रकार प्राधिकारी का निष्कर्ष है कि घरेलू उद्योग को हानि खपत के पैटर्न में परिवर्तन के कारण हुआ है न कि संबद्ध देशों से पाटन के कारण ।

#### (च) तीसरे देशों से आयात

प्राधिकारी को दी गई सूचना के अनुसार, असंबद्ध देशों में संबद्ध वस्तुओं की आयात की कुल मात्रा संबद्ध देशों के कुल आयातों का छोटा अनुपात रहा है तथा इनके बाजार भाव में करीब 2 प्रतिशत तक परिवर्तन आया है । अतः अनंतिम रूप से यह माना जाता है कि घरेलू उद्योग पर इनका कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है।

#### (छ) प्रौद्योगिकी में विकास

कॉपर क्लैड लेमिनेट्स के विनिर्माण में प्रौद्योगिक, उपकरण, प्रक्रिया नियंत्रण और कच्चे माल का चयन प्रमुख भूमिका अदा करते हैं । मूल रूप से सीसीएल के विनिर्माण में तीन प्रमुख प्रक्रियाएं होती हैं - 1. लेजिन का मिश्रण 2. प्रीप्रेग तैयार करना 3. प्रैसिंग

1. रेजिन के चयन तथा मिश्रण के मामले में यथोचित रसायन विद्या महत्वपूर्णकारक होता है और मिश्रण को बदलने के लिए सतत अनुसंधान जरूरी है ताकि वह इलैक्ट्रानिक उद्योग की उन्नत अपेक्षा के अनुकूल हो । उदाहरण के लिए लेमिनेट के टीजी बढ़ाने के लिए रेजिन प्रणाली अलग है । बहुपरतीय टेप्रा



के लिए पतले लेमिनेट के मामले में कार्यशील लेमिनेट का प्रयोग किया जाता है जिससे आयामी स्थायित्व में सुधार हो सके और इसके बाद भी रेजिन प्रणाली भिन्न होती है। पर्यावरण उन्मुख लेमिनेट्स के मामले में भी नॉन ब्रोमिनेटेड रेजिन का प्रयोग किया जा रहा है जिसमें कोई अन्य क्षतिकारी रसायन नहीं होते हैं किंतु जीपीईएल अधिकांश रूप से एकल रेजिन प्रणाली का प्रयोग करता है न कि विकसित मिश्रणों का जिसकी उद्योग को सतत आधार पर आवश्यकता होती है। प्राधिकारी द्वारा यह भी पड़ताल की गई है कि उन्होंने अपनी रेजिन मिश्रण में ऑटोमेशन प्रणाली को प्रवृत्त नहीं किया है जिससे सतत क्वालिटी तथा उच्च तकनीकी विनिर्देशन वाले संबद्ध माल का नियमित आधार पर उत्पादन किया जा सके।

2. प्रीप्रेस तैयार करना लेमिनेट प्रक्रिया में सबसे महत्वपूर्ण कारक होता है। प्रीप्रेस में रेजिन का अंश होना महत्वपूर्ण होता है और यह लेमिनेट के अनुप्रयोग तथा मोटाई के अनुसार अलग अलग होता है। 3.2 एम एम के लिए रेजिन का अंश पतले कोर से भिन्न होता है। रेजिन का प्रवाह भी उतना ही महत्वपूर्ण होता है। हाईफ्लो लो रेजिन अंश, लो फ्लो हाई रेजिन अंश, हाई फ्लो हाई रेजिन अंश, लो फ्लो लो रेजिन अंश की श्रेणियों के लिए विभिन्न प्रीप्रेस किस्मों के लिए रेजिन मिश्रण तथा प्रक्रिया की भिन्न किस्मों की आवश्यकता होती है जो अन्य देशों की भांति जीपीएल में उपलब्ध नहीं हैं। प्रीप्रेस की मोटाई कायम रखने के लिए यह आवश्यक है कि लेमिनेट की उचित अंतिम मोटाई को प्राप्त किया जाए जो विश्व-स्तर का ट्रीटर ही प्रदान कर सकता है। प्राधिकारी की आगे यह भी राय है कि घरेलू उद्योग ने इस क्षेत्र में भी प्रौद्योगिकी उन्नयन नहीं किया है और उन्होंने सतत आधार पर बेहतर क्वालिटी उत्पाद की डिलीवरी के लिए यथोचित आधुनिकीकृत उपस्कर भी नहीं लगाया है।
3. प्रैसिंग : संबद्ध देशों के पास वैक्यूम प्रैस होती है जो एकसमान मोटाई प्रदान करती है। हाईड्रोलिक प्रैस द्वारा बिना वैक्यूम प्रणाली के दबाए गए लेमिनेट की बढ़ते हुए उद्योग की सख्त जरूरतों के अनुसार एकसमान मोटाई नहीं होगी और उसके अंदर बहुत सा वायु कोटर होगा। पीसीबी प्रैस करने के दौरान यह कोटर फैल जाएगा और मिजलिंग तथा डीलेमिनेशन जैसी समस्याएं खड़ी होंगी। किंतु इस समस्या को पीसीबी प्रैसिंग के आखिरी चरण में ही पहचाना जा सकता है जो उत्पादकता का लक्ष्य हासिल करने के लिए खतरनाक है। जीपीईएल के पास वैक्यूम प्रणाली नहीं है अतः इससे उपर्युक्त क्वालिटी अपेक्षा पूरी नहीं की जा सकती है। चूंकि यह एकसमान मोटाई तथाक्वालिटी के लिए सतत आधार पर संबद्ध माल के विनिर्माण में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र होता है इसलिए प्राधिकारी का विचार है कि घरेलू उद्योग ने अपनी मशीनरी का

उन्नयन नहीं किया है और उसने इन वर्षों में प्रौद्योगिकी में हुए विकास को आत्मसात नहीं किया।

4. यह भी पाया गया है कि घरेलू उद्योग ने अनेक विषयेतर कारणों की वजह से अपनी विनिर्माण सुविधाओं का उन्नयन नहीं कर सका है। प्राधिकारी का विचार है कि सीसीएल प्रिंटेड सर्किट बोर्डों के विनिर्माण में एक महत्वपूर्ण अंतर्निविष्ट साधन होता है जिससे बदले में उच्च अत्याधुनिक इलैक्ट्रानिक उपस्कर बनता है। यह देखा जाता है कि लेमिनेट्स/बोर्ड की क्वालिटी तथा तकनीकी विनिर्देशन अंतिम उत्पाद की अंतिम क्वालिटी के लिए महत्वपूर्ण होते हैं। यह भी माना जाता है कि घटिया क्वालिटी अथवा त्रुटिपूर्ण लेमिनेट के वित्तीय प्रभाव अनुप्रवाही उद्योग के स्वरूप के कारण अनेक होते हैं। प्राधिकारी को यह दिखाया गया कि चूंकि पोपुलेटिड पीसीबी की कुल लागत में लेमिनेट की लागत बहुत छोटी होती है, इसलिए यह पोपुलेटिड पीसीबी की संपूर्ण लागत के लिए लेमिनेट/बोर्ड सप्लायकर्ता की वित्तीय दायित्व होता है और इसे लेमिनेट/बोर्ड की लागत तक सीमित नहीं रखा जा सकता है। इसलिए प्राधिकारी यह समझता है कि प्रौद्योगिकी विकास को आत्मसात नहीं करना घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति का एक प्रमुख कारण बन गया है।

#### अंतिम निष्कर्ष:

#### निष्कर्ष

23. पूर्वोक्त पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी इस निष्कर्ष पर पहुंचा है कि:

- i) भारत को संबद्ध माल का निर्यात उसके सामान्य मूल्य से कम मूल्य पर किया गया जिसके परिणामस्वरूप पाटन हुआ है;
- ii) घरेलू उद्योग को जांच अवधि के दौरान वास्तविक क्षति हुई है;
- iii) तथापि प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि घरेलू उद्योग को हुई वास्तविक क्षति के लिए संबद्ध देशों से हुए पाटित आयातों को जिम्मेवार नहीं ठहराया जा सकता है जैसा कि क्षति एवं कारणात्मक संबंध से संबंधित पैराग्राफों में विश्लेषण किया गया है। इसलिए प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु के पाटन तथा घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच कारणात्मक संबंध का अभाव है क्योंकि प्राधिकारी ने यह निर्धारित किया है कि पाटित आयतों के अलावा अन्य कारकों से घरेलू उद्योगों को क्षति हुई है।

24. इसलिए, कस्टम् उपशीर्ष संख्या 74102100, जो चीन जन.गण., ताईवान, हांगकांग, सिंगापुर, कोरिया जन.गण. फिलिपिन्स और थाईलैंड मूल से या से निर्यातित होने के लिए इस जांच का संबद्ध मामला है, के अतर्गत वर्गीकृत कॉपर क्लैड लैमिनेट्स के आयात से संबंधित अधिसूचना संख्या 14/44/2002-डीजीएडी दिनांक 25 जून 2003 द्वारा पूर्व में पाटनरोधी शुल्कों को वापिस लेने की सिफारिश करने को आवश्यक पाया गया है ।
25. उपर्युक्त को देखते हुए, निर्दिष्ट प्राधिकारी ने नियम 18, उपनियम (4) के प्रावधानों की शर्तों में अनंतिम शुल्कों को वापिस लेने की सिफारिश की है । यदि कोई हो तो, पहले ही लागू या एकत्रित किए गए अनंतिम शुल्कों को वापिस किया जाएगा ।
26. इस आदेश के विरुद्ध किसी भी अपील को उपर्युक्त अधिनियम के अनुसार सीमाशुल्क, उत्पादशुल्क व सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष रखा जा सकता है ।

अभिजित सेनगुप्ता, निर्दिष्ट प्राधिकारी

**MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY****(Department of Commerce)****(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI DUMPING AND ALLIED DUTIES)****NOTIFICATION**

New Delhi, the 23rd December, 2003

**Final Findings**

**Subject : Anti-dumping investigation concerning imports of Copper Clad Laminates originating in or exported from China PR, Taiwan, Hong Kong, Korea RP, Singapore, Philippines and Thailand.**

**No. 14/44/2002-DGAD.**—Having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended in 1995 and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, thereof;

**A. PROCEDURE:**

1. The following procedure has been followed with regard to the subject investigation:

(i) The Designated Authority (hereinafter referred to as Authority), under the above Rules, received a written petition from M/s. Gujarat Perstorp Electronics Limited, Gandhinagar, on behalf of the domestic industry, alleging dumping of copper clad laminates (CCL) originating in or exported from China PR, Hong Kong, Taiwan, South Korea, Singapore, Philippines & Thailand (hereinafter referred to as subject countries);

(ii) The Authority notified the Embassies of subject countries in India about the receipt of dumping application made by the petitioner before proceeding to initiate the investigation in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra;

(iii) The Authority issued a Public Notice dated 24<sup>th</sup> December, 2002 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti dumping proceedings concerning imports of copper clad laminates of Schedule I of the Customs Tariff Act.

(iv) The Authority forwarded copy of the said public notice to the known exporters, importers, industry associations and to the complainant and gave them an opportunity to make their views known in writing.

(v) According to sub-rule (3) of Rule 6 supra, the Authority provided a copy of the petition to all the known exporters and Embassies/High Commissions of subject country in India.

(vi) The Authority sent questionnaires, to elicit relevant information, to the following known exporters from China PR, Hong Kong, Taiwan, South Korea, Singapore, Philippines & Thailand. M/s ISOLA Pacific Inc Philippines., M/s Doosan Corporation, Korea (RP), Shanghai Nanya, China PR, M/s King Board laminates, Hong Kong, Nam Hing Industrial Laminate Ltd, China PR, and M/s. Nan Ya Plastic Corporation, Taiwan have responded to the exporters questionnaire. However, complete response has been received from M/s ISOLA Pacific Inc Philippines., M/s Doosan Corporation, Korea (RP), Shanghai Nanya, China PR. Some of the exporters as well as Importers asked for an extension of time to respond to the questionnaire and the Authority after considering the request from the exporters and importers extended the time period to reply to the questionnaire by two weeks.

(vii) The Embassies/High Commissions of subject countries in New Delhi were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time;

(viii) The Ministry of Foreign Trade, (MOFTU) Beijing, Govt. of China PR, Hong Kong, Taiwan, South Korea, Singapore, Philippines & Thailand were also informed about the initiation of investigation and requested to advise the exporters/producers from their countries to respond to the questionnaire within the prescribed time.

(ix) The preliminary findings were issued on 25<sup>th</sup> June and all the interested parties were requested to submit their comments within a period of 40 days. The Authority also forwarded a copy of preliminary findings to the Embassies of subject countries with a request that exporters and producers in their country may be advised to furnish their views on the preliminary findings.

(x) The Authority provided an opportunity to all interested parties to present their views orally on 20<sup>th</sup> October 2003. All parties presenting views orally were requested to file written submissions, of the views expressed orally. The parties were advised to collect copies of the views expressed by the opposing parties and offer rebuttals, if any.

(xi) Arguments raised by the interested parties before announcing the preliminary findings, which have been brought out in the preliminary findings notified have not been repeated herein for sake of brevity. However, the arguments raised by the interested parties are proposed to be considered in Final Findings.

(xii) Domestic verification (Domestic Industry and users) as well as exporters verification of the data submitted by them were undertaken by the Authority.

(xiii) The Authority kept available non-confidential version of the file maintained by the Authority and kept open for inspection by the interested parties;

(xiv) \*\*\*\* in this notification represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules;

(xv) The investigation covered the period from 1<sup>st</sup> January 2002 to 30<sup>th</sup> September 2002;

(xvi) The Authority conducted on the spot investigation of the domestic industry, user industry, and exporters to the extent considered necessary.

(xvii) The cost of the production of the domestic industry was also analysed to work out the optimum cost of the production and the cost to make and sell the subject goods in India on the basis of Generally Accepted Accounting Principles based on the information furnished by the petitioner so as to ascertain if anti Dumping duty lower than dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

(xviii) Copies of initiation notice were also sent to FICCI, CII, ASSOCHAM etc., for wider circulation.

## **B. Product Under Consideration**

### **Submissions by the Domestic Industry**

2. The product under consideration in the present petition is Copper Clad Laminates (CCL). Copper clad laminates are laminates of paper or glass fabric of a kind used to make printed circuit boards. A laminate is a multiple layer of paper or glass fabric which has been joined/fixed together using a resin. A foil of copper is laminated on the top of the sheet (either on one side or both sides) to provide current carrying capability to the laminate. There are various kinds of Copper Clad Laminates made out of Glass Epoxy, Paper Phenolic or Composite. These are further laminated with together with the copper foil which can be single sided or double sided depending upon the requirement which again could be of varying thickness. While thickness of the foil is largely uniform (18/35/70 micron), a number of prepregs can be laminated together depending upon the specific end requirement, resulting in varying thickness of the end product. Thus, while different laminates vary in terms of the associated costs and price (due to, primarily, difference in the raw material costs), different types of laminates result from the same production process. Subsequent to the public hearing, there is no fresh argument from the domestic industry except that it wants certain data to be made available by some user industries who have asked for exclusion of certain grades on the ground of quality. Petitioner submits that as of now there is a mere unsubstantiated allegation by these interested parties. In fact, one of the parties conceded at the time of hearing itself that one of these types of laminates are "laminates of the future" and are "going to be increasingly used". Such being the case, petitioner wonder how can these interested parties demand exclusion of these types, but for possible mala fide intention to seek some ways to circumvent the duties imposed.

Product Under Consideration - Submissions by Exporters and Importers- Views of IPCA, Bangalore, AT&S, Mysore, ECIL, Hyderabad, M/s Sulakshna Curcuits Ltd, Hyderabad, Sanmar Micropack Ltd, Bangalore, M/s Akasaka Electronics Ltd, Navi Mumbai, M/s NSP Electronics Ltd, Bangalore, Multiline Electronics Private Limited, Pune, Gujarat Narmada Valley Fertilizers Co. Ltd., Gujrat, Deccan Circuits Pvt. Ltd, Pune, Multiline Circuits, Mumbai, M/s. U.V Circuits Pvt. Ltd, Bangalore, M/s. Shiltron Electronics & Engineering Pvt. Ltd., Bangalore, Linaks Microelectronics Ltd, Lucknow, M/s. Circuit Systems India (Private) Ltd, M/s GNVFC Ltd., ITI Ltd, Bangalore, Cosmic Engineering Enterprise, M/s. Epitome Components Ltd., Ahmednagar, M/s. HI-REL Components (India) Ltd, M/s. Ascent Circuits Pvt. Ltd, Tamil Nadu, Shogini Technocrafts Pvt. Ltd., M/s. Garg Electronics, Haryana, Emco Electronics Ltd, Mumbai and others.

3.(i) IPCA has taken note of the categorization of the product under consideration in three broad categories which are paper phenolics, glass fabric and composite copper clad laminates with the various thicknesses and copper cladding. IPCA submits that actual cost of production would substantially vary in terms of the thickness and other properties. Hence, the claim of the domestic industry in the petition that the laminates of different thickness and other properties of one type are one and are the like products and are therefore, technically and commercially substitutable is factually wrong and erroneous. They have highlighted the attention of the Authority to the Rule 6(1) of the Annexure of Anti Dumping Rules, where due allowances have been sought to be granted for difference which affect price comparability. They have further stated that the laminates of specific thickness and other properties which cannot be manufactured by the domestic industry should be exempted from the scope of the present investigation. For manufacture of multi-layered PCBs, it is imperative to use laminates with thickness ranging from .075 mm to .80 mm. The final thickness of PCBs for which these thin cores or such laminates are used, are in the range from .6 mm to 3.2 mm based on the end requirement of the customer. They submit that the domestic industry does not produce such laminates and therefore, the same must be excluded from the purview of investigation.

(ii) M/s Gujarat Perstorp does not manufacture sophisticated laminates of quality with high CTI, High TG and Halogen free laminate also called popularly as green laminate and with special characteristics needed for intricate electronic equipment, defence and space application etc and as demanded by the international customers for their Printed Circuit Boards. These are specially manufactured by International manufacturers and cannot be met by M/s. Gujarat Perstorp.

(iii) Importers of Single sided PCB use paper phenolic laminate, mainly of the FR-1 grade. This grade of copper clad laminate is used commonly for the PCB requirement of the consumer electronic sector such as TVs, audios, etc. The PCB manufacturers have no right to decide the copper clad laminate to be used for PCBs to be supplied to any of them. We can say with 100% confidence that most of the above MNCs and Indian companies with MNC backup have not approved Gujarat Perstorp as a laminate supplier for their PCB requirement.

(iv) The importers have observed various problems in the laminates while processing and these problems were thickness variation in laminates, blistering, copper peel off, twist, dents on surface, improper surface finish and so on. They add that they received instructions from their customers not to use the petitioner's laminates for the PCB. Lot of batches have been rejected and they are not satisfied with the quality supplied by the Gujarat



Perstorp. They have mentioned inconsistency in quality and supply and inability of the petitioner to supply the material at the right time as the major factor for not buying the material from the petitioner.

#### Product Under Consideration - Examination by the Authority

4. The product under consideration as mentioned in the Initiation Notification in the present petition is Copper Clad Laminates (CCL) which are laminates of paper or glass fabric or composite of a kind used to make printed circuit boards and depending on the number of prepregs used and thickness of copper foil and its coating on the prepreg (i.e., both side or single side), a number of different types of copper clad laminates can be made to meet specific end requirement. The Authority notes that different subtypes of laminates differ significantly in terms of their associated costs and prices.

5. Manufacturing process of laminates involves impregnation of glass fabric or paper fibres with appropriate resin, drying of resin and hardening of Prepregs, forming of a laminate using Prepregs and copper foils, pressing of Prepregs in a Hydraulic Press and trimming and cutting to size. Depending upon the basic reinforcement used (paper or glass), type of binder used and copper cladding done, the product have been categorized as paper phenolic Copper Clad Laminates, glass epoxy copper clad laminates and composite copper clad Laminates. Some importers of the subject goods have pointed out that the Petitioner does not manufacture three prepegs of type 2116 and 1080 which are required for copper clad laminates bearing thickness less than 0.7 mm. It is also claimed that for the manufacture of multilayered laminates, it is imperative to use laminates with thickness ranging from .075 mm to .080 mm. They have further added that it is imperative to use prepegs and inner core of the same manufacturer because of the problems of delamination which results into weak spots, ranging starvation resulting into rejection and registration failures. In response to the contention of the importers the petitioner ha also confirmed that mix of laminates and prepegs of different suppliers is not advisable with regard to laminates below 0.8 mm thickness. Keeping in view the claims of the domestic industry, the response of the other interested parties and the available material on record, the Authority, has, therefore, restricted the scope of product under consideration of Copper clad laminates to thickness 0.8mm to 3.2 mm. The Authority also finds that the standards set by NEMA (National Electrical Manufacturers Association) are largely used by the producers and consumers alike and the same sufficiently describes technical parameters of the product. The Authority, therefore, confirms that product under consideration in the present investigation is copper clad laminates belonging to thickness 0.8 mm to 3.2 mm (both 0.8mm and 3.2mm inclusive) and which may be phenolic based on paper (NEMA grade FR

1&2 and XPC), glass based (NEMA Grade FR4 Single sided or double sided) and composite (NEMA grade CEM-1) (**hereinafter referred to as subject goods**). Thickness less than 0.8mm and more than 3.2mm and NEMA grades other than mentioned above are not under the scope of investigation.

6. The Authority also notes that Copper Clad Laminates are produced, sold and measured in terms of Square Meter, Numbers, Kilograms, Sheets, and Pieces etc. The product falls under customs classification 7410.21 under the Customs Tariff Act. The product attracted 5% basic customs duty in the present investigation period.

### C. Like Article

7. The Petitioner claimed that there is no major difference in the subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from subject countries. The petitioner further claimed that the technology employed is also the same, even though the scale of operation may differ. Subject goods imported from subject countries and goods produced by the domestic industry were claimed comparable by the petitioner in terms of their characteristics such as physical/ mechanical and electrical properties, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, distribution & marketing, pricing and tariff classification of the goods. The two are technically and commercially substitutable. Petitioner further claimed that the consumers have used the two interchangeably. Goods produced by the petitioner were claimed to be a like article to the goods imported from the subject countries within the meaning of anti-dumping Rules. After the public hearing the petitioner has further stated that it would also be relevant to point out that while these parties have been arguing a lot about quality problems, the very same parties have purchased significant volumes from the petitioner and have, in fact, either significantly delayed payments or not made payments at all.

8. Importers, consumers and exporters have claimed that the goods produced by the petitioner are not comparable to the goods imported from the subject countries. They have pointed out various physical and chemical defects in the product sold by the petitioner and have also added that their products are not certified by the major international testing organizations, and major companies in the user industries who are mostly transnational. They have represented that these user industries specify their own standards and sources from where subject goods need to be sourced. They have also represented that the subject goods manufactured by the domestic industry do not get past the standards set by the major hardware manufacturers and thus they cannot source the material from the domestic industry. There are also arguments that the Copper Clad

laminates have different thickness and costs of different subtypes are different based on the base material, thickness of Copper foil and number of prepregs used and thus they cannot be taken as like article and any comparison with the domestic manufactured goods need to take into account of these factors.

9. The Authority has examined the submissions made by the interested parties and has also examined the submissions of the domestic industry.

The Authority notes that Rule 2(d) defines like article as follows: -

*"like article" means an article which is identical or alike in all respects to the article under investigation for being dumped in India or in the absence of such article, another article which although not alike in all respects, has characteristics closely resembling those of the articles under investigation.*

The Authority notes that technical specifications of the subject goods produced and supplied by the petitioner are comparable to the goods imported from the subject countries and the two are comparable in terms of physical, chemical properties and substitutability in terms of its usage though the issue of absence of consistency in the quality of subject goods supplied by the domestic industry has been substantiated by the various importers and users who in turn are themselves producers of printed circuit boards in India. However the goods closely resemble in terms of various parameters except parameters which have already been mentioned and excluded in the product under investigation by the Authority and . As regards the claims of various interested parties regarding the poor and inconsistent quality of the subject goods produced by the domestic industry, the Authority holds that differences arising in the use of these two products have not been brought out quantifiably by any interested parties except the fact that there are problems of the consistency of quality in terms of various criteria from time to time.

10. For the determination of the Like Article, the Authority is required to see whether various types are comparable in terms of parameters such as product specifications, physical and technical characteristics, manufacturing process and technology, plant and equipment, functions and uses, their substitutability, tariff classification and consumer perception. The Authority agrees that different types of laminates vary significantly in terms of associated costs and prices. These differences result due to use of different raw material and layers which different laminate has. However plant and equipment-manufacturing process employed to different types of laminates with different thickness and types along with their tariff classification, functions and uses are largely the

same though there are significant variations in the production process in terms of various testing which is done by the exporters at each stage of manufacture and which is very vital in terms of its end use by various PCB manufacturers. However Keeping in view the arguments made by various interested parties, and the available material on record, the Authority holds that the subject goods (CCL belonging to Glass epoxy (FR4 D/S), paper phenolics (FR 1&2 and XPC and composite (CEM-1) pertaining to different thickness (between 0.8mm and 3.2mm) are like article to the goods imported from and sold in the subject countries.

#### **D Domestic Industry**

11. As there are no fresh argument with regards to the issue of the standings subsequent to the public hearing and preliminary findings, the Authority confirms that the petitioner constitutes a major proportion of the total domestic production of that article and hence they constitute domestic industry under Rule 2(b) of the Anti Dumping Rules. Accordingly, the petitioners satisfy the criteria of standing to file the petition on behalf of the Domestic Industry in terms of Rule 5(3) (a) of the Rules supra.

#### **E De Minimus**

12. As regards ascertaining that the imports from the subject countries during the period of investigation (POI) are above de-minimus levels, the Authority has referred to the transaction wise data from the subject countries as made available by IBIS.

Import from subject countries Source IBIS		
Countries	Imports SQM	% of Imports from Subject countries
China PR	355556	29.38
Hong Kong	91724	7.58
Taiwan	135281	11.18
Singapore	22073	1.82
Thailand	21713	1.79
Philippines	261616	21.62
Korea RP	302919	25.03

The Authority holds that imports from Thailand and Singapore are de-minimus within the meaning of the Rule 14 of the Anti Dumping Rules.

**F. Other Submissions made by various interested parties**  
**Quality Issues- Submissions made by the importers and**  
**Exporters:**

13. (a) The different grades of laminates are formulated for various applications as per the requirements of end users. The basic specifications, which need to be met as per Neema specifications, are a) Flammability rating, b) Maximum operating temperature, c) Comparative tracking index. The M/s GPEL manufacturers primarily FR-4 laminate & other grade like FR-1, FR-2, CEM-1 and XPC were in the process of development. These grades are not meeting the requirements of the industry and Neema specifications. They have enclosed data sheets of various laminate manufacturers as mentioned below. Most of the users of the laminate specify the minimum requirements as given below:

Grade	UL Classifications	Operating Temperature	CTI Value
-------	--------------------	-----------------------	-----------

**XPC**

GP-1200	--	--	--
CC-3610	94HB	130 degree	600V
NS-6711CT	94HB	130 degree	600V
MCL-43	94HB	130 degree	200V
DS-1125	94HB	130 degree	130V

**FR-1**

GP-2200	94V0	105 degree	--
CC-3710	94V0	130 degree	600V
NS-6732CT	94V0	130 degree	525V
MCL-437F	94V0	130 degree	600V
DS-1107A	94V0	130 degree	600V

**FR-2**

GP-2500	94V0	--	175V
CC-3700	94V0	105 degree	180V
NS-6704CT	94V0	105 degree	600V
MCL-417F	94V0	105 degree	600V
DS-1202	94V0	105 degree	600V

**CEM-1**

GP-5100	94V0	105 degree	200V
CC-5100	94V0	130 degree	200V
NS-4791	94V0	130 degree	200V
MCL-E479	94V0	130 degree	230V
DS-7106	94V0	130 degree	300V

**FR-4**

GP-6300	94V0	130 degree	200V
CC-5400	94V0	130 degree	100V
NS-4700	94V0	130 degree	150V
MCL-E67	94V0	130 degree	198V
DS-7405	94V0	130 degree	250V

Legend:- GP – Gujarat Perstorp  
 CC – Ching Kaung  
 NS – Shin Sung  
 MCL – Hitachi Chemical  
 DS – Doosan

Since M/s GPEL 's product of XPC, FR-1 & CEM-1 grade do not meet minimum technical specification & requirements , the same ought to be removed from the scope of present enquiry & duty.

b) Further, some of the special requirements like high glass transition above 145 degrees; Green laminates (Halogen free) are not manufactured by the petitioners. Therefore these laminates should be exempted from the purview of present enquiry.

c) In the case of Magnet Users Association Vs. Designated Authority 2003 (157) E.L.T. 150 there the subject product was "Hard Ferrite Ring Magnet" where the antidumping duty was imposed "on all grades and sizes" of ring magnet which included those not manufactured by Indian Industry. The CEGAT tribunal held that there is no justification for including grades of ring magnets, which are not, produced in India and therefore excluded them from the scope of antidumping duty. In the case of Videocon Narmada Glass Vs. Designated Authority 2003 (151) E.L.T. 80, the subject product was "Strontium Carbonate". The tribunal held that granular Strontium Carbonate was not manufactured by domestic industry so the tribunal found no justification for including granular Strontium Carbonate not produced in India, and therefore excluded them from antidumping duty. In the case of Oxo Alcohols Industries' Association Vs. Designated Authority 2001 (130) E.L.T. 58, the subject product was "Oxo Alcohol" where the antidumping duty was imposed on "Normal Hexanol" on the ground that product manufactured by use of normal hexanol can substitute the products manufactured by other Oxo Alcohol. The tribunal set aside the duty being imposed on normal hexanol on

the ground that normal hexanol is not one manufactured or produced by domestic industry. In other cases also the tribunal had set aside the duty imposed on a product which is not manufactured by domestic industry (Indian Refractory case, Birla Periclase case etc.).

d) Various interested parties have pointed out that the petitioner company is the sick company and suffering losses for the last many years and they have asked the domestic industry to differentiate the injury due to its sickness and alleged dumped imports separately. They have further clarified that though quality is not an issue in anti dumping investigations, the domestic industry has been losing orders not because of the price but because they could not supply consistently acceptable quality material. Various interested parties have submitted detailed analytical report indicating how the domestic industry could not supply the subject goods consistently within the give time range and with consistent quality as per the approved standards. They have further added that they had to resort to look for alternative sources after the petitioner company failed to supply proper quality material. While the jurisprudence area of the anti dumping has not recognized the quality concerns as a legitimate basis to differentiate poor quality products from the product under consideration, the fact is that within this industry poor quality is fatal for the PCB manufacturers as a populated PCB is several times more than a blank PCB and the PCB manufacturer is penalized to the full extent of the cost of populated PCB by the consumer. It has further been added that constituent of domestic industry have repeated been providing poor quality. They have also enclosed confidential credit notes issued by the domestic industry during the POI. They have also specified that a majority of the subject goods pertain to high TG subject goods (TG more than 135), FR IV with CTI 400 and above, FRI and FRII with CTI more than 600 and FRI and FRII with copper thickness more than 70 and green laminates and these are not manufactured by domestic industry.

e) It has been pointed out by the various interested parties that the other domestic producers of the subject goods M/s. Bakelite Hylam had severe quality issues and they have illustrated the records which show the problems being faced by material supplied by M/s. Bakelite Hylam Limited. They have further represented that the injury being faced m/s. Bakelite Hylam is clearly unrelated to any imports.

f) The only petitioner in this petition is a BIFR company. The company sought refuge in BIFR in June 1997. Annexure 2 to Rules 5 of the anti dumping rules is unequivocal. Dumping can only be remedied if the dumping causes injury:

"It must be demonstrated that the dumped imports, through the effects of dumping, and the export performance and the productivity of the domestic industry.

g) M/s. Guarat Perstorp has been before the BIFR since 1997, the onus is upon them to show that it is not the problems that took them to BIFR in the first place which are responsible for their continued injury, (if any), but rather than the alleged dumping which is causing them injury. Anything else would be contrary to law.

h) A critical feature of the PCB industry is that its consumer must approve the copper clad laminate which is being used. This is best compared to the situation of a tailor, where the tailor must comply with its customers requirements on the brand of the material. It is not sufficient that the tailor replaces the brand with other similar or even identical brand. The customer specifies the mill from which the material must be sourced. Similarly, in this industry, if the PCB producer were to substitute the copper clad laminate of his own choice, besides the financial penalty that it would be compelled to bear, the material would just not be approved by the customer. This aspect should please borne in mind by the Hon'ble Designated Authority prior to imposing anti dumping duty on all viable sources of copper clad laminates.

#### Submissions made by the Domestic Industry

14. (a) Petitioner has already provided detailed information, which shows that the domestic industry has suffered material injury due to dumping of the subject goods from the subject countries. The DA has already recorded a detailed findings on this account, which is relied upon. All the parameters, collectively and cumulatively, establish that the domestic industry has suffered material injury from the dumped imports.

b) A number of arguments were raised by various parties at the time of oral hearings. These were, however, repeat of what has already been stated by them before the PF and therefore have already been addressed by the DA in the PF itself. There are no new argument brought out by any party with regard to injury and causal link. Such being the case, the DA may kindly confirm the interim findings and duties with suitable upward revision in the duties.

c) The injury to the domestic industry is evident, inter alia, and in addition to the points already made by the domestic industry, increasing outstanding payments vis-à-vis sales made. A number of parties have withheld payments to the domestic industry (information being provided separately on confidential basis).

d) Petitioner has earlier provided all relevant information for the purpose of the present investigation. Petitioner is willing to provide any further information which the DA may consider relevant in the present matter.



e) Even though no fresh argument has been raised by any opposing parties, Petitioner would like to give a detailed rejoinder to any issue which these parties may like to raise in the present matter.

**Submissions by Domestic Industry after Disclosure**

15A. With regards to the like article and the submissions made by other interested parties about High TG, high CTI and other special laminates, the domestic industry has submitted that GPEL has not adopted this technology though capability exists to introduce these special laminates provided the demand is sufficient to warrant it. As regards quality problems, the domestic industry has submitted that it is a subjective issue and has not been substantiated adequately. They have further added that even the imported laminates can not claim to be 100% defect free. As regards the fact that technology up gradation not implemented by the GPEL, they have added that it calls for massive investment and being a BIFR unit, this could not be made possible. They have further added that Indian PCB market size being so insignificant and their payment pattern so pathetic, no body would invest in a world class facility by installing the latest equipment and technology in Resin mixing, preparation of prepregs and vacuum pressing.

**Submissions made by other interested parties (importers ) after Disclosure**

15B. As regards the subject goods, they have commented that M/s GPEL do not have similar parameters and characteristics as associated with the Like article. They have submitted that clubbing the three types of laminates together is untenable and unsustainable in light of the established jurisprudence in this area. It has been added by various importers that no valid arguments and even the basic points raised by them have not been answered by the domestic industry. On the issue of the injury, subject goods belonging to the different types can not be clubbed together as they have different applications. With regards to the volume injury, it has been submitted that M/s GPEL since last number of years was not a serious producer and never had a significant stake in the Indian market. Its production since 1995 had been less than 5% of its capacity and its contribution to the Indian market was all along very insignificant. It has also been submitted that the losses being caused to it are not due to imports as it has been in a loss for the last number of years and has been with BIFR. It can be due to reason other than import. It has also been added along with the evidence that as on date, the domestic industry has ceased to exist and with the closure of sole unit manufacturing copper clad laminates, the duty already levied, may kindly be withdrawn. They have, thus, concluded that there is no causal link between injury to domestic industry and alleged dumped imports from subject countries. It has been submitted by them that the Designated Authority should terminate the investigations as there is no on-going injury for the reasons that the closure of the domestic industry is primarily due to its own inefficiencies and not due to any real or apparent threat

of injury and the continuation of investigations would offer no solace to the petitioners as it has already shut its Division. They have also enclosed a copy of the notice of closure submitted by M/s. Gujarat Perstorp Electronics Limited and addressed to Secretary, Department of Labour & Employment, Gandhinagar informing them that the domestic industry has decided to close down with effect from 3<sup>rd</sup> December 2003 for the reasons explained in the Annexure.

#### Examination by the Authority

15C. The Authority has examined all these issues under the appropriate headings in this final finding.

#### **G. NORMAL VALUE, EXPORT PRICE AND DUMPING MARGIN:**

16. Under Section 9A(1) I of the Customs Tariff Act 1975, Normal value in relation to an article means:

- The comparable price, in the ordinary course of trade, for the like article when meant for consumption in the exporting country or territory as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- When there are no sales of the like article in the ordinary course of trade in the domestic market of the exporting country or territory, or when because of the particular market situation or low volume of the sales in the domestic market of the exporting country or territory, such sales do not permit a proper comparison, the normal value shall be either:-
- Comparable representative price of the like article when exported from the exporting country or territory or an appropriate third country as determined in accordance with the rules made under sub-section (6); or
- The cost of production of the said article in the country of origin along with reasonable addition for administrative, selling and general costs, and for profits, as determined in accordance with the rules made under sub-section (5)";

Provided that in the case of import of the article from a country other than the country of origin and where the article has been merely transhipped through the country of export or such article is not produced in the country of export or there is no comparable price in the country of export, the normal value shall be determined with reference to its price in the country of origin.

17. The Authority sent questionnaires to all the known exporters for the purpose of determination of normal value in accordance with Section

9A(1)l. Few exporters have responded to the questionnaire in the form and manner required as per letter to the exporters and exporters questionnaire.

1. M/s Doosan Corporation, Korea RP :

M/s. Doosan Corporation has responded to the exporters' questionnaire by giving information with regard to various appendices mentioned in the exporters' questionnaire. The Authority, after the public hearing, has verified all the data submitted by the cooperating exporter with regards to the cost of production, domestic sales price and the export price including all the adjustments claimed by the exporter. The Authority has assessed the normal value for the cooperating exporter after making all the adjustments required to be made at the ex-factory level as claimed by the exporter. Similarly, the authority has assessed ex factory export price of the cooperating exporter after allowing various adjustments as claimed by the exporter while arriving at net export price at the ex factory level. The Authority has worked out a Dumping margin for each of the different grades (NEMA) and thickness of copper foil of the subject goods by making a comparison between the normal values at the Ex. Works level and export price at ex factory level. This comparison was based on the weighted average selling price of each type/grade/thickness of the subject goods manufactured by the producers/exporters and exported to India during the POI for which a comparable type/grade of the subject goods could be found. Thus, weighted average overall dumping margin was determined by computing the dumping found on each type without zeroing negative dumping found on individual types. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined.

2. Other Exporters from Korea RP

The Authority notes that none of the other exporters has responded from Korea RP to the exporters' questionnaire. The claim made by the petitioner with regard to the determination of normal value has also not been disputed by the other interested party/parties. Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods. The ex-factory export price has been arrived at taking the weighted average export price during the POI after making applicable adjustments

towards commission, ocean freight, etc and thereafter the dumping margin for the Non cooperating exporters has been established.

3. M/s ISOLA Philippines, Philippines.

Subsequent to the preliminary findings, the exporter submitted the complete response to the questionnaire and the Authority, after the public hearing verified the data submitted by the exporter with regards to the cost of production, domestic sales, export sales to India and all the adjustments claimed by the exporter to arrive at the normal value and export price at the ex factory level. The Authority has assessed the normal value for the cooperating exporter after making all the adjustments required to be made at the ex-factory level as claimed by the exporter. Similarly, the authority has assessed ex factory export price of the cooperating exporter after allowing various adjustments as claimed by the exporter while arriving at net export price at the ex factory level. The Authority has worked out a Dumping margin for each of the different grades (NEMA) and thickness of copper foil of the subject goods by making a comparison between the normal values at the Ex. Works level and export price at 'ex factory level. This comparison was based on the weighted average selling price of each type/grade/thickness of the subject goods manufactured by the producers/exporters and exported to India during the POI for which a comparable type/grade of the subject goods could be found. Thus, weighted average overall dumping margin was determined by computing the dumping found on each type without zeroing negative dumping found on individual types. The comparison showed the existence of dumping of the subject goods by the exporter during the POI. The weighted average dumping margin, expressed, as a percentage to the export price has been determined.

4. Other Exporters from Philippines

The Authority notes that none of the other exporters has responded from Philippines has responded to the exporters' questionnaire. The claim made by the petitioner with regard to the determination of normal value has also not been disputed by the other interested party/parties. Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods. The ex-factory export price has been arrived at taking the weighted average export price during the POI after making applicable adjustments towards commission, ocean freight and thereafter the

dumping margin for the Non cooperating exporters has been established.

#### 5. M/s KINGBOARD Laminates, Hong Kong

The Exporter has not submitted the transaction wise information pertaining to domestic sales as per Appendix 1 of the questionnaire without which the test of the ordinary course of trade could not be carried out by the Authority. The Authority notes that the exporter has not submitted information in the form and manner required under the exporters questionnaire. As no information has been submitted under Appendix 8 and no transaction wise information has been furnished by the exporter, the Authority can not determine whether the sales have made in the ordinary course of trade. The claim made by the petitioner with regard to the determination of normal value has also not been disputed by the exporter. Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods. Export price at the ex-factory level has been determined by taking weighted average export price to India from Hong Kong with applicable adjustments and thereafter the dumping margin has been established.

#### 6. Other Exporters from Hong Kong

The Authority notes that none of the other exporters has responded from Hong Kong to the exporters' questionnaire. The claim made by the petitioner with regard to the determination of normal value has also not been disputed by the other interested party/parties. Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods. The ex-factory export price has been arrived at after taking into account weighted average export price for the type/grade during the POI and making applicable adjustments towards commission, ocean freight, etc and thereafter the dumping margin for the Non cooperating exporters has been established.

#### 7. Exporters from Taiwan

The Authority notes that none of the exporters has responded from Taiwan in the form and manner pertaining to the exporters' questionnaire. The claim made by the petitioner with regard to the determination of normal value has also not been disputed by the other interested party (ies). Under the circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods. The Authority, therefore, has determined the normal value for other exporters from Taiwan as per the best information available in terms of 6(8) of the anti dumping rules. The ex-factory export price has been arrived at after making applicable adjustments towards commission, ocean freight and thereafter the dumping margin for the Non-cooperating exporters has been established.

8. M/s Shanghai Nanya, China PR

The Authority provided opportunity to the known exporters from China PR to furnish information relevant to the investigations and offer comments, if any, in accordance with the Section 9A(i)©. The Authority also communicated to the known exporters and to the Embassy of China in India that it proposes to examine the claim of the petitioner in the light of para 7 & 8 of the Annexure I of the Anti Dumping rules as amended. Only one of the exporters from China PR i.e. M/s. Shaghai Nanya, PR have responded to the Authority with complete response to the questionnaire. The Chinese exporter M/s Shanghai Nanya which replied to the Authority's exporters questionnaire requested Market economy treatment on the basis of the submissions made in response to the specific questions asked by the Authority for enabling the cooperating exporter to rebut the presumptions pertaining to the Para 8(3) of the Annexure 1 to the Anti Dumping Rules (grant of market economy treatment). In examining the merits of the claim, the Authority sought to verify whether the producer/exporter which cooperated in the proceedings enjoyed a degree of legal and factual independence from the state, comparable to that which would prevail in a market economy country and which would justify the authority in proceeding with determination of the normal value as per para 1-6 of the Annexure I of the Anti-Dumping Rules, thereby justifying itself in accepting the rebuttal in terms of paragraph 7 and 8 of the Annexure I of the Anti Dumping rules. To this end detailed questions regarding the ownership, management control, determination of commercial and business policies were addressed to the exporter/producer. None of the producers with the sole exception of the M/s Shanghai Nanya

responded to the Authority, that their operations were sufficiently independent from the Chinese Authorities to qualify for the market economy treatment.

M/s Shanghai Nanya is a legal entity incorporated in the CHINA PR with no equity holdings from the state/government. The Authority carried out on the spot verification at the premises of the company in order to examine the circumstances under which it operated and its relations with the state. In particular, the company was able to show, to satisfaction of the Authority that management and the control of the factory, both in terms of production, marketing and pricing was clearly in their hands and their operations were sufficiently independent from the state.

In view of the above, it was considered possible to grant market economy treatment to the cooperating exporter and consequently proceed to determine Normal value vide paragraphs 1-6 of the Annexure I to the Anti Dumping Rules.

In order to establish normal value for only cooperating exporter/producer M/s. Shanghai Nanya, it was first determined that whether the total domestic sales of the subject goods by the producer was representative when compared to their total sales of the subject goods concerned sold in the exporting country and whether their sales are under ordinary course of trade in terms of Rule 2 of the annexure I to the anti dumping rules. The authority notes that the domestic sales of the co-operating exporter was representative sales. In order to find whether these are under ordinary course of trade, the Authority analysed the cost of the production of the subject goods and compared with it to the transaction wise information submitted by the cooperating exporter with regard to the domestic sale prices of the subject goods. The Authority further verified the cost of production of the subject goods as per the records kept by the co-operating exporter in his book of accounts and discovered that the domestic sales are under ordinary course of trade within the meaning of the Anti Dumping rules. The Authority determined the normal value for the cooperating exporter as US\*\*\*\*\* at the ex factory level after netting back all the adjustments which were duly verified by the Authority. The export price at the ex factory level was also determined after netting back all the adjustments.

#### 9. Other Exporters from China PR

The Authority notes that none of the other exporters has responded from China PR to the exporters' questionnaire. The claim made by the petitioner with regard to the determination of normal value has also not been disputed by the other interested party/parties. Under the

circumstances Normal value under the rules is determined on the basis of facts available as per rules 6 (8). Therefore the information available on the estimated costs of the production in the country of origin plus selling, administrative and general expenses and a reasonable amount of profit after making reasonable adjustments has been taken as the basis for working out the normal value of the subject goods. The Authority, therefore, has determined the normal value for other exporters from China PR as per the best information available in terms of 6(8) of the anti dumping rules. The ex-factory export price has been arrived at after making applicable adjustments towards commission, ocean freight and thereafter the dumping margin for the Non-cooperating exporters has been established.

Country	Name of the Exporter/Producer	D.M%
Korea RP	M/s DOOSAN Corp,	21.28
	Other Exporters	56.46
Hong Kong	All Exporters	40
Taiwan	All Exporters	40.67
Philippines	M/s ISOLA	6.2
	Other Exporters,	39.47
China PR	M/s Shanghai Nanya	NIL
	Other Exporters,	57.17

#### H. INJURY:

18. For the examination of the impact of the imports on the domestic industry in India, the Authority considered such indices having a bearing on the state of the industry as production, capacity utilisation, sales quantum, stock, profitability, net sales realisation, the magnitude and



margin of dumping, etc. in accordance with Annexure II (iv) of the Rules  
supra

1. The effect of the dumped imports shall be assessed, in accordance with para 6 of the Annexure II to the Rules, in relation to the domestic production of the Like Article when available data permits separate identification of that production on the basis of such criteria as the production process, producers' sales and profits. If such separate identification of that production is not possible, the effect of the dumped imports shall be assessed by the examination of the production of the narrowest group or the range of products, which includes the like product for which the necessary information can be provided.
2. It is observed that though the different types of copper clad laminates have different characteristics, usage, etc. there are a number of processes, which use common equipment and facilities. In view of the fact that the production processes as well as the production capacities overlap each other in varying proportions, it would not be appropriate nor feasible to assess the injury to the domestic industry for each individual types of laminates. The Authority, therefore, in accordance with para 6 of the Annexure II to the Anti-Dumping Rules, considers it appropriate to assess the injury for all different types of copper clad laminates cumulatively.

#### EXAMINATION BY THE AUTHORITY

19. Analysis of Injury to the domestic industry has been done on the basis of the information available on record and the verification done by the officials of Directorate of Anti-Dumping & Allied Duties. The injury determination and injury analysis have been done on the basis of imports of subject goods from the subject countries during the POI and preceding years. For determining total volume of imports during the POI and previous years, the Authority has taken the import data of the subject goods from for subject countries and countries other than subject countries as no transaction wise data has been made available with the units as square meter from DGCI&S. Moreover, Exporters have mentioned units as SQM as unit of exports in all their transactions. For the purpose of determining price undercutting, price underselling and price suppression and price depression, the Authority has compared the different CCL (Glass based, fibre based and composite), which is imported from the subject countries and those, which are manufactured and sold by the domestic industry. Further, for comparison, the Authority has taken the appropriate thickness of different CCL which has been modal during the POI and which have been sold in the largest number within various bases (glass, fibre and composite) by the domestic industry as well as largest in terms of imports from subject countries.

Volume InjuryAbsolute rise in Imports from Subject Countries and their market share in Total Imports

1. It is noted that the imports of subject goods from subject countries have increased significantly in absolute terms. Further, it is also noted that share of imports of the subject goods from the subject countries increased significantly in relation to total imports of the products into India.

Imports of Subject goods from the subject countries Units SQM				
	99-00	2000-01	Ap-De Ann	POI Ann
Subject countries	984241	992044	1279763	1587843
Other Countries	65912	33467	15458	25630
Total Imports	1050153	1025511	1295221	1613473

Share of imports from subject countries as a proportion to demand.

2. The Authority has calculated the total demand in the country by adding the total imports to the sales of the domestic industry of the product under consideration. The Authority notes that the share of China PR, Hong Kong, Taiwan, South Korea, and Philippines in total demand of the subject goods has increased during the POI while the share of other imports has increased marginally. Thus, the Authority concludes that there has been a rise in the market share of imports of the subject countries as a share of total demand and it has increased significantly during the POI as compared to previous years.

Imports of Subject goods from the subject countries Units SQM				
	99-00	2000-01	Ap-De Ann	POI An
Subject countries	10	100.	130.03	161.
Other Countries	10	50.7	23.45	38.8
Total Imports	10	97.6	123.34	153.6

Share of subject countries in total Imports (%)				
	99-00	2000-01	A-D 01 An	POI Ann
Subject countries	93.7	96.7	98.8	98.4
Other Countries	6.2	3.2	1.1	1.5
Total Imports	10	10	10	10

Increase in Share of Imports in relation to production of domestic industry.

3. The share of imports of the subject goods from the subject countries have increased in relation to the production of the domestic industry though the market share of the domestic industry has improved during the POI as compared to preceding year. The Authority concludes that the domestic industry has not suffered any decline in market share during the POI as compared to preceding year though its share continues to be dismal in relation to the total demand.

Share of Domestic Industry in total demand				
	99-00	2000-01	A-D 01 An	POI Ann
Subject countries	55.8	56.64	67.2	86.11
Other Countries	3.74	1.91	0.81	1.39
Domestic Industry	13.35	17.29	9.77	11.96
Other Producers	27.12	24.16	22.22	.54
Total	100	100	100	100

Production and Capacity Utilisation

4. The production and the capacity utilization of the domestic industry has increased during the POI as compared to the preceding nine months. The Authority, therefore concludes that the domestic industry has not suffered any injury on account of loss of capacity utilisation though the capacity utilisation itself remains very dismal as compared to the total demand of the subject goods. The domestic sales of the domestic industry has increased during the POI as compared to the preceding period though they have declined very marginally from 00-00. The Authority notes that both the capacity utilisation and domestic sales have not caused any injury to the domestic industry during the POI as

compared to preceding year though the domestic industry continues to suffer low capacity utilization and domestic sales since earlier years.

#### PRICE EFFECT

5. As regards the impact of the dumped imports on the domestic industry the principle (iv) of Annexure-II of the Anti-Dumping Rules states:

“The examination of the impact of the dumped imports on the domestic Industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilisation of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.”

In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree. The Authority has compared the landed value of imports of subject goods from subject countries during the POI with the net sales realization and has found that there has been a significant price under-cutting by the dumped imports. The landed value of imports has been found to be significantly lower than the domestic industry's net sales realization.

The Authority has also examined the claim of the petitioner that the domestic industry is suffering on account of the losses from the sale of Copper Clad Laminates. The Authority notes that price underselling is an important indicator to make an assessment of the injury. The Authority has worked out the Non-injurious price for the product under consideration and compared the same with the landed value to arrive at the extent of price underselling. The analysis shows a significant level of incidence of price underselling causing injury to the domestic industry. Additionally, the imports were having significant suppressing/depressing effect on the prices in the domestic market, as the domestic industry had not been able to raise its selling price in view of the dumped imports of the subject goods. Thus examination of the available evidence shows that the domestic industry as a whole has suffered injury on its sales of subject goods during POI. The Authority has determined the extent of price undercutting during the POI and concludes that the domestic industry has suffered price undercutting

and price underselling during the POI because of import from the subject country.

#### Selling price

6. The selling prices of the domestic industry have declined during the POI as compared to 2000-01. However the Authority also notes that their cost of production has come down in almost the same proportion. It is also noted that the domestic industry has been making continuous losses since past several years though they have cut their losses during the POI as compared to preceding year. The Authority after examining the evidence concludes that the firm is facing injury on account of continuing losses over the years though the losses have come down during the POI as compared to preceding year but is higher than 99-00.

#### Inventories

7. There is no apparent change in the inventory position of the domestic industry during the POI as compared to preceding year though sales have increased during the POI over the preceding year. However these are much higher as compared to their production and as compared to the year 99-00. The Authority after examining the evidence concludes that the firm has not faced injury on account of higher inventory of the subject goods during the POI as compared to the preceding year though the inventory levels are higher as compared to year 99-00.

#### Productivity & Growth:

8. The productivity of the domestic industry (production per employee) has improved marginally as compared to preceding nine months. It is also noted that the growth of the company has been negative during the POI as compared to the preceding years. The Authority after examining the evidence concludes that the firm is facing injury on negative growth.

#### Closure of No. of Producers:

9. It is noted that the other producers of the subject goods in India has closed down their production and the Petitioner is the sole company left as the domestic industry. Subsequent to the public hearing, the other domestic producers namely M/s PCS industries and M/s Bakelite Hylam has represented that they have closed down their operations due to dumping from the subject countries. However, after the public hearing, they have not submitted any documents or substantiated any contention which proves that they have closed down their operations due to dumping from the subject countries. On the contrary, various interested parties have placed records before the Authority that shows

that the domestic industry had severe quality issues in terms of consistent supplies to the user industries. However, on the basis of evidence made available before the Authority, it can not be conclusively proved that closure of a number of producers had been on account of dumping of the subject goods from the subject countries.

Ability to raise fresh investments.

10. It is noted that the petitioner has got some loans from the financial institutions earlier. The petitioner claims that the funds drawn could not be utilized due to existing adverse performance and higher interest burden. It is also claimed that so severe has been the impact of dumping that even the repayment of existing liabilities has become difficult, leave aside fresh investments. The Authority has examined the contention of various interested parties and notes that in view of the situations prevailing, the firm has little ability to raise the investments.

Employment:

11. It is noted that the employment with the company has marginally declined during the POI as compared to 2000-01 though it has increased from 99-000. However, based on the evidence made available, the Authority could not conclusively determine any injury on account of loss of employment.

Cash Flow and Profitability:

12. The cash flow of the company, which had become positive during 2000-01 has been declining continuously thereafter and has been negative since that time. The Authority after examining the evidence provisionally concludes that the firm is facing injury on account of declining cash flow.

Price Suppression/Depression and Price Underselling.

13. It is noted that the landed price of the imports are lower than the cost of production of the domestic industry. Additionally, the

Economic Parameters Relating to the Injury					
	Units	99-00	2000-01	Ap-De An	POI Ann
Installed capacity	Index	100	100	100	100
Production	Index	100	140	91	100
Capacity Utilisation	% Index	100	140	91	100
Sales Domestic	Index	100	129	79	94

Sales Other producers	Index	100	88	24	8
Opening Stock	Index	100	58	148	160
Closing Stock	Index	100	253	273	213
Cost of Production	Index	100	105.4	104.99	87.71
Avg Selling price	Index	100	117	108	92
Profit/Loss	Index	-100	-32	-87	-58
Working Capital	Index	100	110	102	90
Capital Employed	Index	100	103	101	98.9
Return on capital	Index	-100	-22	-78	-50
Salary & Wages	Index	100	152	161	158
Productivity	Index	100	113	77	85
Growth	%	100	15	-20	-31

selling price of the domestic industry is below the cost of production of the domestic industry, which has resulted in price underselling by the domestic industry. The Authority after examining the evidence provisionally concludes that the firm is facing injury on account of price suppression and price underselling.

#### Price Undercutting in Copper Clad Laminates (in Rupees) PSQM

Price Undercutting during POI				
Country	Net selling Price petitioner	Landed Price from subject country	Price Undercutting	Wt Avg Price Under cutting %
China PR	****	****	****	22%
Hong Kong	****	****	****	
Taiwan	****	****	****	
DOOSAN, Korea	****	****	****	
Others Korea	****	****	****	
ISOLA, Phillipines	****	****	****	
Others, Phillipines	****	****	****	

#### Conclusions on Injury

20. From the foregoing, the following conclusions are made by the Authority regarding injury suffered by the domestic industry

1. Imports from the subject countries of subject goods have increased significantly in absolute terms and also in relation to total imports of Copper Clad Laminates in India. Imports from the subject countries have also increased in relation to the demand of Copper Clad Laminates in India.
2. The market share of the domestic industry has improved during the POI as compared to the preceding year. Their capacity utilisation has also improved during their POI as compared to the preceding year though capacity utilisation as such remains quite dismal. The domestic sales have also increased during the POI as compared to the preceding year and their production also has marginally improved.
3. Imports are undercutting the selling prices of the domestic industry. The petitioner is suffering from price underselling also as landed price of subject goods are below the Non Injurious price or fair selling price of the domestic industry. The domestic industry has suffered losses on account of sales on subject goods. However it is also confirmed that they have been incurring losses for last several years also.
4. On the basis of the foregoing, the Authority observed that the domestic industry has suffered material injury.

#### **I CAUSAL LINK**

21. It has been vehemently argued by a number of interested parties that the injury suffered by the Domestic Industry, if any, cannot be attributed to the dumped imports. It has been asserted that in the absence of the causal relationship no anti-dumping duties can be imposed even if the Designated Authority reached a conclusion of existence of dumping and injury to the Domestic Industry. In support of their contention, the interested parties have mainly advanced the following arguments:

- a. *While it is submitted that it may be legally permissible to protect the Domestic Industry under BIFR, it is obligatory on the Designated Authority to look into the reasons for the injury suffered by the complainant if a unit has been under BIFR as a sick company.*



- b. The Domestic Industry has been able to increase its market share when the imports from the subject countries had gone up. This clearly established that there is no causal link between the alleged dumping of goods and the claimed injury of the Domestic Industry.
- c. Progress Report on the implementation of the Scheme under BIFR indicates that the real cause of the alleged injury was the steep reduction in the import duties. While it has been mentioned that the petitioner has approached the Designated Authority for imposition of anti-dumping duties, it is submitted that this approach is legally flawed as the injury on account of fall in customs duties cannot be remedied by imposition of anti-dumping duties. It is well understood that the purpose of customs duties is quite different from that of anti-dumping duties and the latter cannot be resorted to if the Government itself, in its wisdom and exercise of the sovereign powers, decides to lower the general level of protection to the Domestic Industry.
- d. Annexure IV of the above said report clearly admits that time delay in the process of implementation of the scheme resulted in additional losses to the extent of Rs. 671 lakhs.
- e. The decline in turnover by Rs. 4088 lakhs during October 1998 to March 2002, and the resultant losses have been attributed to factors other than the alleged dumping. The Designated Authority has not addressed these crucial factors (refer Annexure IV of the report).
- f. **GPEL has been a sick unit since its inception:** GPEL has been performing poorly since its very inception in 1993. The unit, in fact, closed down in 1995 and had to approach BIFR in the year 1996. The BIFR in its Sanctioned Scheme Order gave the reasons for the poor performance of GPEL in detail. It is submitted that the petitioner has misled the Authority by not declaring the pertinent details to the Designated Authority. It was held that Gujarat Perstorp Electronics Ltd. (GPEL) at the time of setting up in October 1993 had cost overrun to the tune of over 28% and that the operations of the unit have been unsatisfactory since inception. In addition, the following observations were made by the BIFR:

- Problems in absorption of technology
- Management deficiency
- High debt burden
- Delayed quality test reports resulting in production delays
- Deficiencies in plant & machinery restricted capacity utilization
- Cash losses led to liquidity and working capital constraints

- g. *It can be seen from the above that the cause of the alleged injury cannot be attributed to the alleged dumping as the plant was in pathetic financial condition even during the period when there was no allegation of dumping. The poor performance of the petitioner cannot be attributed to the alleged dumped imports. The case, therefore, completely fails on ground of lack of causality.*
- h. *Low Capacity of the Petitioner:*

*Thus, the petitioner is not in a position to meet even 18% of the total Indian requirement. It is submitted that the supply position of the domestic producer has to be seen in the context of their best achieved capacity and the fact that there are severe constraints upon them to enhance their capacity due to financial mismanagement and consistently poor performance (refer BIFR document).*

- i. **Poor and Inconsistent Quality:** *Evidence has been submitted to suggest that the quality of the Copper Clad Laminates supplied are not up to mark and, therefore, cannot be used in the manufacture of a product which is ultimately used in sensitive electronic equipment.*
- j. **Technological and other problems:** *The technological capability of GPEL has been questioned on the following ground:*
  - i. *Non-availability of trained manpower as not many laminate manufacturers are there.*
  - ii. *Plant and machinery used for the process was elementary. Some of the machineries were fabricated locally and had resulted into serious quality problems (this fact has been acknowledged by GPEL in BIFR case).*
  - iii. *The so called technology collaborator, M/s. Perstorp is not a name to be reckoned with at international level. As a matter of fact, Perstorp sold their business to Polyclad about four years ago. As such, GPEL has no access to any technology.*
  - iv. *The knowledge base in quality, production and manufacturing processes is very poor.*
  - v. *It is not a QS 9000 approved company. Many PCB customers insist on buying inputs from a QS 9000 company only.*

- vi. Their market thrust is extremely poor. The company has only one production location and nobody would like to buy from such a company as in the event of production disruption, there is no fall back option.
- vii. GPEL does not have backward integration. They have to depend on import raw material prices.
- viii. The first pass yield is 80% as against overseas laminate manufacturers where it is more than 95%.

- (i) ***Obsolete Technology and Lack of Upgradation: It has been said that GPEL has acquired technology from its collaborator M/s. Perstorp, Sweden. It is further said that Perstorp is not a name to be reckoned with at international level. As a matter of fact, Perstorp sold their business to Polyclad about four years ago and there is no question of their having access to the latest technology or even any kind of upgradation.***

#### Examination by the Authority of Causal Link

22. The authority has carefully examined the submissions made by different interested parties in respect of the issue of causal link. Subsequent to the preliminary findings, a detailed examination was made by the Authority with regards to the issues pertaining to the material injury to the domestic industry and causal link between the material injury to the domestic industry and dumped imports. Paragraph (v) of Annexure II of the Anti-dumping Rules reads as under:

*"(v) It must be demonstrated that the dumped imports are, through the effects of dumping, as set forth in paragraphs (ii) and (iv) above, causing injury to the domestic industry. The demonstration of a causal relationship between the dumped imports and the injury to the domestic industry shall be based on an examination of relevant evidence before the designated authority. The designated authority shall also examine any known factors other than the dumped imports which at the same time are injuring the domestic industry, and the injury caused by these other factors must not be attributed to the dumped imports. Factors which may be relevant in this respect include, inter alia, the volume and prices of imports not sold at dumping prices, contraction in demand or changes in the patterns of consumption, trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers, developments in technology and the export performance and the productivity of the domestic industry."*

- (a) In determining whether injury to the domestic industry was caused by the dumped imports, the Authority examined the impact of all known factors and their consequences on the situation in the Industry. Known factors other than

dumped imports which could at the same time, have injured the domestic industry, were also examined to ensure that the possible injury caused by these other factors was not attributed to the dumped imports. The Authority notes that none of the arguments advanced by various interested parties with regards to the various issues including the issues raised concerning injury and causal link have been addressed by the domestic industry in their rejoinder. In fact, no rejoinder has been filed by the domestic industry subsequent to the written submissions following public hearing.

(b) Effects of the Dumped Imports: Between 1999-2000 and the POI, dumped imports from the subject countries in market share from 55.8% in 1999-00 to 82.67%) in the POI. During the POI, it was 98.5% of the total imports. As regards the export prices, they decreased substantially during the whole period under consideration and undercut the domestic industry prices during the POI on an average by 22%.

© Effects of Other Factors: Closure of other two industries producing the subject goods. Few importers have suggested that other domestic producers namely M/s Sandur laminates, which was a 100% EOU and M/s Bakelite Hylam who had closed down in 1999, has nothing to do with the injury due to dumped imports from subject countries. M/s Bakelite Hylam and M/s PCS Industries have submitted their production details up to 2001-02 and have confirmed that they had closed down their operations due to the dumping from a number of countries. Subsequent to the public hearing, however, both M/s. Bakelite Hylam and M/s. PCS Industries have not submitted any evidence/documents with regard to the fact that they have closed down their operations due to dumping from subject countries. Therefore, the authority on the basis of records available cannot conclusively determine that these two industries have closed down operations because of dumping from subject countries.

(d) Company registered with BIFR

(1) It has been submitted by various interested parties that the petitioner company has significantly eroded its net worth over the past number of years due to inefficient performance and not due to alleged dumped imports. It has also been submitted that the company has already registered with a competent Authority (BIFR) for a rehabilitation package and continued losses being suffered by the petitioner company in over the last number of years cannot be attributed to the alleged dumped imports. The Authority finds truth in the statement that the company has been found to have eroded its net worth due to reasons set out in the report as claimed by the various interested parties. It is also noted that competent Authority has found certain reasons for the sickness of the company and has further found that in case the company takes certain steps in overcoming these shortcomings, the company would become viable again. The Authority notes that the company has been

suffering injury for a very long period and there could be several causes for this prolonged injury. Reasons for the injury has been well brought out in the report by the competent authority and certain action has already been taken by the petitioner as per the copies of the return filed before the competent Authority as submitted by the petitioner. However the Authority agrees after examining all the records that certain areas namely problems in absorption of technology, delayed quality test reports resulting in production delays, deficiencies in plant & machinery and therefore restricted capacity utilization have remained persistent. Though the injuries earlier suffered by the domestic industry as set out in the report as mentioned earlier and now being suffered by the domestic industry is due to the time periods, the Authority notes that the domestic industry has not taken sufficient steps towards building any capacity or any improvements in technology as mentioned in other heads or maintaining consistent supplies knowing fully well that even one negative test out of several testing results can cause enough damage to the user industry (this could be as high as 50 times the cost of the copper clad laminates).

(ii) After the preliminary findings, it has been alleged by the various interested parties that the company has closed down its operations and is no longer producing any subject goods even after the Provisional anti dumping duties are in operations. The Authority has verified the records on 11<sup>th</sup> December 2003 of domestic industry and notes that it has significantly curtailed its operations even after imposition of provisional anti dumping duties and no of days layoff has significantly increased during last 6 months. The Authority noted on a verification visit that the company was not in operation. It also noted that the petitioner had conveyed to the BIFR that "in view of the prevailing scenario of CCL manufacturing in India, operations of the company are not viable and hence the Honourable BIFR has been requested to consider and take on its record the conclusion about the company not being viable in the current circumstances" and they have further requested BIFR to pass a suitable order under the applicable provisions of the Sick Industrial Companies Act, 1985. Subsequent to the disclosure statement, various interested have informed the authority of a closure notice sent by the domestic industry with effect from 3<sup>rd</sup> December 2003.

(e) Contraction of Demand or Changes in the Pattern of Consumption:

The Authority could not find any evidence of contraction of demand. However, the authority has verified the submissions made by the exporters and user industry in terms of the technical characteristics of the subject goods, which are now in demand, by the user industry of the subject goods. The authority notes that there is an increasing demand and consumption of the subject goods with high TG (TG more than 135), FR 4 with CTI 400 and above, FRI and FRII with CTI more than 600, green (halogen free) laminates in all the types/grades. Correspondences with the domestic industry have been placed before the authority by the user industry, which indicates that the domestic

industry is not in a position to supply the subject goods with the above-mentioned technical specifications. On the basis of the foregoing, the authority notes that there is a change in the pattern of consumption and the domestic industry has not been able to live with and technologically upgrade the subject goods as per the changed pattern of consumption. The authority thus, concludes that certain injury to the domestic industry has been caused by the change in the pattern of consumption and not due to dumping from subject countries.

(f) Imports from Third Countries:

According to the information placed before the Authority, the total import volume of the subject goods originating in third countries remained a small proportion of the total imports made by subject countries and their market share fluctuated around 2% . Therefore, they are considered not to have had a significant impact on the domestic Industry.

(g) Developments in Technology

In manufacturing Copper Clad Laminates, The Technology, Equipments, Process Control & the selection of Raw material plays the major role. Basically there are three major process in the manufacturing of CCL. 1. Mixing the Resin 2. Generating Prepregs 3. Pressing

1. In case of selecting the resin and mixing , suitable chemistry is important factor and continuous research is required to change the composition to suit the advanced requirement of the electronic industry. For example for increasing the TG of the laminate the resin system is different. In case of Thin laminates for Multilayers Tetra functional laminates are being used for improving the dimensional stability and again the resin system is different. Also in case of Environment friendly Laminates Non-Brominated resin is being used which does not have any other hazardous chemicals.

But GPEL largely uses a single resin system and has not developed combinations which industry needs on a consistent basis. It has also been verified by the Authority that they have not implemented automation system in their resin mixing so that subject goods of a consistent quality and higher technical specifications could be produced on the regular basis.

2. Generating PREPREGS is the most important factor in laminate process. The resin content in the Prepreg is important and it will vary with reference to the application and thickness of the laminates. For 3.2 mm the resin content is different from thin core. The resin flow also equally important. For the categories of High Flow Low resin Content, Low Flow

High Resin Content, High Flow High Resin Content, Low Flow Low resin Content, the different types of Prepregs needs different types of resin mixing and process which is not being maintained in GPEL like the other countries. Maintaining thickness of the Preprgs is very essential to achieve the proper final thickness of the laminate, which can be provided by only a world class Treater. The Authority is again of the view that the domestic industry has not upgraded technology in this segment too and has not installed suitable modernized equipment for delivery of better quality products on a consistent basis.

3. Pressing: The subject countries have Vacuum Press, which provides Uniform Thickness. The laminates pressed by Hydraulic press without vacuum system will not have uniform thickness as per the stringent requirement of the growing industry and will have lot of air cavity inside. During PCB process the cavity will expand and create problems like measling and delamination. But this problem can be identified only at the final stage of the PCB processing which is dangerous in achieving the productivity. GPEL does not have vacuum system and hence the above quality requirements cannot be achieved. As this is a vital area in the manufacture of the subject goods of a uniform thickness and quality on a consistent basis, the Authority is of the view that the domestic industry has not upgraded its machinery and has not absorbed developments in the technology over the years.

(4) It is also observed that the Domestic Industry due to a variety of extraneous reasons has not been able to upgrade its manufacturing facilities. The Authority is of the view that the subject goods is an important input in the manufacture of Printed Circuit Boards, which in turn form an important input in highly sophisticated electronic equipment. It is seen that the quality and the technical specifications of the laminates / boards are critical for the ultimate quality of the end-product. It is also appreciated that the financial implications of a poor quality or defective laminate is enormous due to the very nature of the downstream industry. It was shown to the authority that even though the cost of the laminate is relatively small in the total cost of a populated PCB, it is the financial liability of the laminate/board supplier for the entire cost of the populated PCB and not restricted to the cost of the laminate/board alone. The Authority, therefore, considers that Non-absorption of developments in technology has been a major factor in the injury to the domestic industry.

#### Conclusions of the Final Findings

23. The Authority after considering the foregoing, concludes that

- i) The subject goods have been exported to India below its normal value resulting in dumping;
- ii) The domestic industry has suffered material injury during the POI;
- iii) However, the Authority has determined that the material injury caused to the domestic industry cannot be attributed to the dumped imports from subject countries as analysed in paragraphs pertaining to the Injury and causal link. The Authority, therefore, concludes that there is an absence of causal link between the dumping of the subject goods from subject countries and material injury to the domestic industry as the Authority has determined that factors other than dumped imports have caused injury to the domestic industry.

24. It is therefore considered necessary to withdraw the anti-dumping duties recommended provisionally, vide notification No.14/44/2002-DGAD dated 25<sup>th</sup> June 2003 on imports of copper clad laminates classified under Customs sub heading No. 74102100 being the subject matter of this investigation originated in or exported from China PR, Taiwan, Hong Kong, Singapore, Korea RP, Philippines and Thailand.

25. In view of the above, the Designated Authority recommends withdrawal of the provisional duties in terms of the provisions of Rule 18, sub rule (4). The provisional duties already imposed or collected, if any, shall be refunded.

26. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise & Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Act, supra.

ABHIJIT SENGUPTA, Designated Authority